3.3.1 RESEARCH ARTICLES IN JOURNAL

Dr. SINDHU A

ASSISTANT PROFESSOR,

UG AND RESEARCH DEPARTMENT OF HINDI,

PAYYANUR COLLEGE, PAYYANUR.

NIBANDHAMĀLĀ

Campus Research Journal

Chief Editor:
Prof. E.M. Rajan, Director

Editors:

Prof. K.K. Harshakumar
HoD Research & Publications

Dr. Sreenivasan P.K.

Twelfth Edition - 2022

GURUVAYOOR CAMPUS
CENTRAL SANSKRIT UNIVERSITY
Under Ministry of Education, Govt. of India
Puranattukara, Thrissur- 680 551, Kerala.

स्त्री स्वत्वनिर्माण और हिन्दी उपन्यास

डॉ. सिन्धु ए[1]

अर्सों बाद आज स्त्री ने अपने खामोशी को तोडी है। वह समाज और साहित्य में कर्तृत्व स्थान पर आ रही है और समाज की मुख्यधारा की ओर तेज़ी से बढने की कोशिश कर रही है। साहित्य में स्त्री लेखिकाएँ सब से अधिक उपन्यास क्षेत्र में देखने को मिलती हैं। क्यों कि उपन्यास मानव जीवन को संपूर्ण अभिव्यक्ति देता है। इसलिए जीवन को उसकी पूर्णता तथा विस्तार के साथ अभिव्यक्त करने में उपन्यास साहित्य ही अन्य विधाओं की अपेक्षा समर्थ निकलता है।"पुन निर्माण और विखंडन के इस युग में स्त्री जीवन की संपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए समाज हृदय में रूढ हुए मिथकों को नए सिरे से देखा जा रहा हैं क्यों कि मिथक समाज हृदय पर,मानव के बोध स्तर पर ही नही अबोध स्तर पर भी बहुत अधिक असर डालता है।परम्परा द्वारा स्वीकृत तथा संसकृति द्वारा व्याख्यायित किसी भी कहानी या पात्र ही मिथक है।"[1] संस्कृति में रूढ होने के कारण मिथक के अस्थित्व पर कोई भी प्रश्न चिह्न नही लगाता। लेकिन स्त्री लेखिकाएँ स्त्री जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए मिथकों का पुनःपाठ करने का प्रयास करती है।

अनुपमा निरंजना और वीणा सिंहा दोनों ने माधवी को पात्र के रूप में स्वीकार कर 'माधवी' और 'पथप्रज्ञा' नामक उपन्यासों की रचना की है। महाभारत में वेदव्यास द्वारा वर्णित उद्योग पर्व के गालव चरित को लेकर दोनों लेखिकाओं ने समाज में स्त्री जीवन के यथार्थ की अभिव्यक्ति की। पुराण में माधवी का चित्र अपने पिता के सम्मान को बनाए रखनेवाली एक 'आदर्श नारी' रूप है। उपन्यास इस आदर्श नारी रूप को तोडता है। इस नव्य पारायण से लेखिकाओं ने स्त्री क्रय विक्रय का साधन बनानेवाले समाज के अन्यायों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया है। साथ ही उसके लिए

[1] Assistant Professor, Dept of Hindi, Payyanur College, Kannur, Kerala – 670 327, Ph: 9497801289

3.3.1 RESEARCH ARTICLES IN JOURNAL

Dr. MINI A R

ASSISTANT PROFESSOR,

UG AND RESEARCH DEPARTMENT OF HINDI,

PAYYANUR COLLEGE, PAYYANUR.

ANUKARSH
ISSN No.: 2583-2948
VOLUME NO. 2, ISSUE NO. 2
April - June 2022
[Hindi]

अनुक्रमणिका

अनुक्रम

संपादकीय - डॉ. अनुपमा तिवारी

कविता

लोग जो जा चुके हैं, गर लौट आएं तो - डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

गोल्डन भूरे रंग की चाय - अमित कुमार मल्ल

गज़ल - दीपक शर्मा 'सार्थक'

कहां से आया यह काला बादल - डां. के. पद्मिनी

ख़बर - डॉ. रश्मि शील

मैं भी पांचाली - वंदना सिंह

आलोचना

स्वाधीनता का अनुभव और राष्ट्रीय अस्मिता - गिरीश्वर मिश्र

'अग्निध्वजा' काव्यसंग्रह में मानवीय संवेदना - डॉ. गायत्रीदेवी

कृषि संस्कृति के सम्वाहक केदारनाथ अग्रवाल - डॉ. पारुल सिंह

भारतीय समाज में व्याप्त वाह्याडंबर के प्रति कवियों का आक्रोश - डॉ. पी. राजरत्नम

नारी चेतना नयी दिशा की ओर - डॉ. मिनी ए आर

हिंदी कथा आलोचना और देवीशंकर अवस्थी - डॉ. एम अब्दुल रजाक

कर्नाटक के लोकगीतों में स्वतंत्रता सेनानियों का गुणगान - डॉ. अनुपमा तिवारी

व्यंग्य

Scanned with CamScanner

केरल ज्योति

फरवरी 2023

ISSN 2320-9976
UGC Care - List Sr. No 58

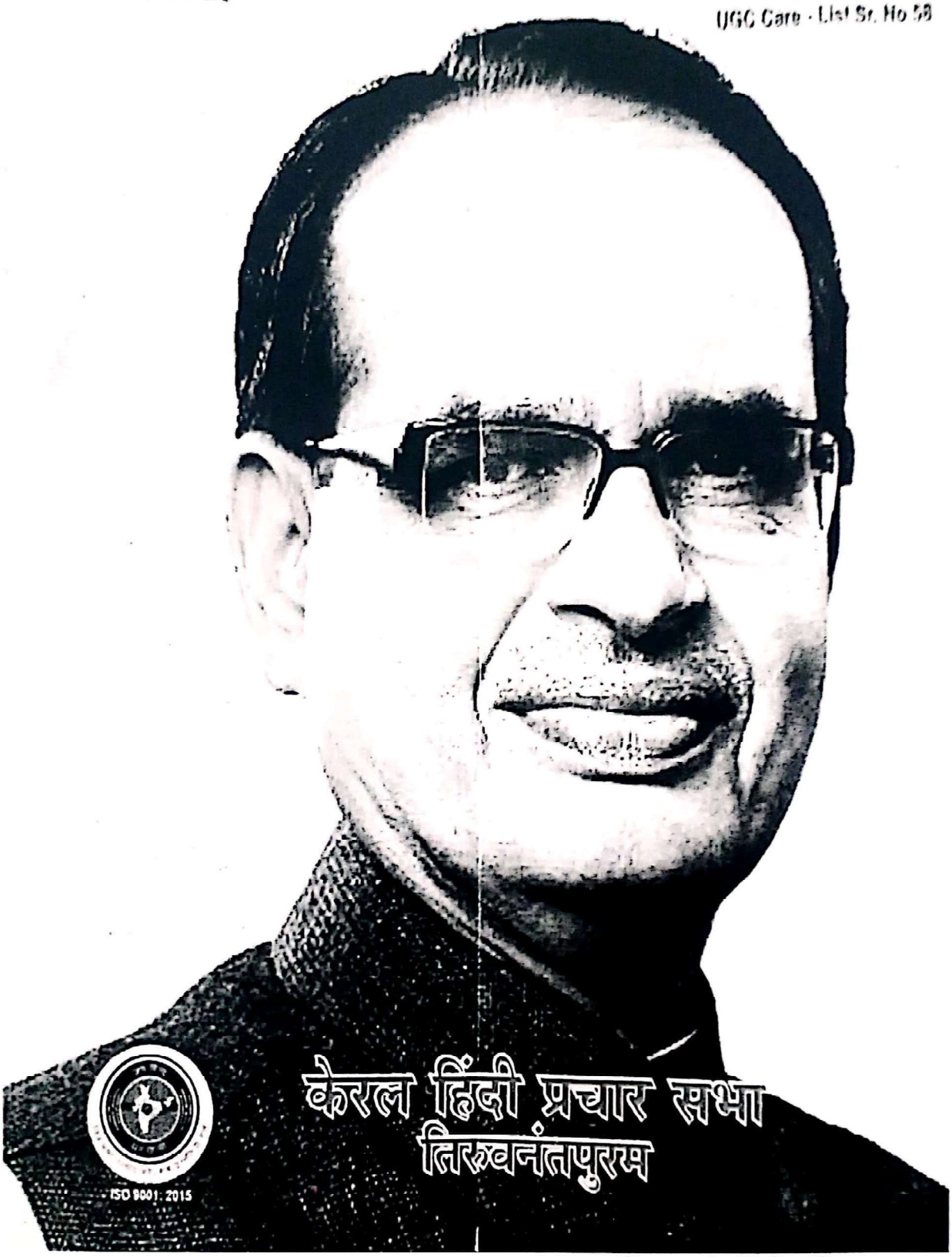

केरल हिंदी प्रचार सभा
तिरुवनंतपुरम

ISO 9001: 2015

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

केरलज्योति

केरल हिंदी प्रचार सभा
की मुख पत्रिका
(केंद्रीय हिंदी निदेशालय की
वित्तीय सहायता से प्रकाशित)

पूर्व संपादक [illegible]
प्रो.(डॉ). एन.रवीन्द्रनाथ
प्रो.(डॉ). सुधा बालकृष्णन
प्रो.(डॉ.) आर. जयचन्द्रन

परामर्श मंडल
डॉ.तंकमणि अम्मा एस
डॉ.लता पी
डॉ. रामचन्द्रन नायर जे

प्रबन्ध संपादक
गोपकुमार एस (अध्यक्ष)

मुख्य संपादक/संपादकीय समिति
प्रो.डी.तंकप्पन नायर

संपादक
डॉ. रंजित रविशैलम

संपादकीय मंडल
सदानन्दन जी
श्रीकुमारन नायर एम
प्रो.रमणी वी एन
चन्द्रिका कुमारी एस
एल्सी सामुवल
आनन्द कुमार आर एल
प्रभन जे एस
अधिवक्ता मधु बी (मंत्री)

सूचना : लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं। उनसे संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पुस्तक 59 अंक : 11 फरवरी 2023

अनुक्रमणिका

संपादकीय 5

'गो मार' जाति के बच्चों में मुक्ति पाने की असमर्थता की छटपटाहट - डॉ. मनोज.एन 6

जलते जंगल में या बहते जंगल में - डॉ. शिल्पा.टी.पी. 8

महादेवी वर्मा और उनका साहित्य - प्रो. (डॉ.) प्रमोद कोवप्रत 14

प्रभा खेतान और नारी विमर्श - डॉ. आशा.जी. 19

'एक यात्रा के दौरान': जीवन-सत्य की खोज
डॉ.सी.एस. सुचित 21

अस्पृश्यता के प्रति हिंदी दलित आत्मकथाएं
डॉ.मिनी.ए.आर. 23

नेता और खजाना! - (कविता) -डॉ.जे. रामचंद्रन नायर 26

'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रित वृद्धावस्था की पीड़ा
डॉ.पीबा शरत 27

श्रीकांत वर्मा की कविताएँ - मगध के संदर्भ में
बीना राजशेखरन 30

अल्बूजी कहानी में अभिव्यक्त वृद्धजीवन का प्रतिरोध
मोनिषा.यू.जे 32

जनसंचार और पत्रकारिता चुनौतियाँ एवं दायित्व
डॉ. पवन कुमार शर्मा 36

राही मासूम रज़ा के उपन्यास में सांप्रदायिकता - शाँति प्रभा 39

विश्व गुरु नानक का सामाजिक क्रांति-दर्शन
डॉ. रविंद्र मासो 42

महान भारतीय आदर्शों की प्रतिमूर्ति आर्यभट्ट : 'अन्वेषक' के संदर्भ में
डॉ. ज्योति.एन. 45

मुखचित्र : मध्यप्रदेश के माननीय मुख्य मंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ISSN 0975-735X

सम्पादक
डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल
डॉ. पीना अग्रवाल

शोध दिशा

60

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

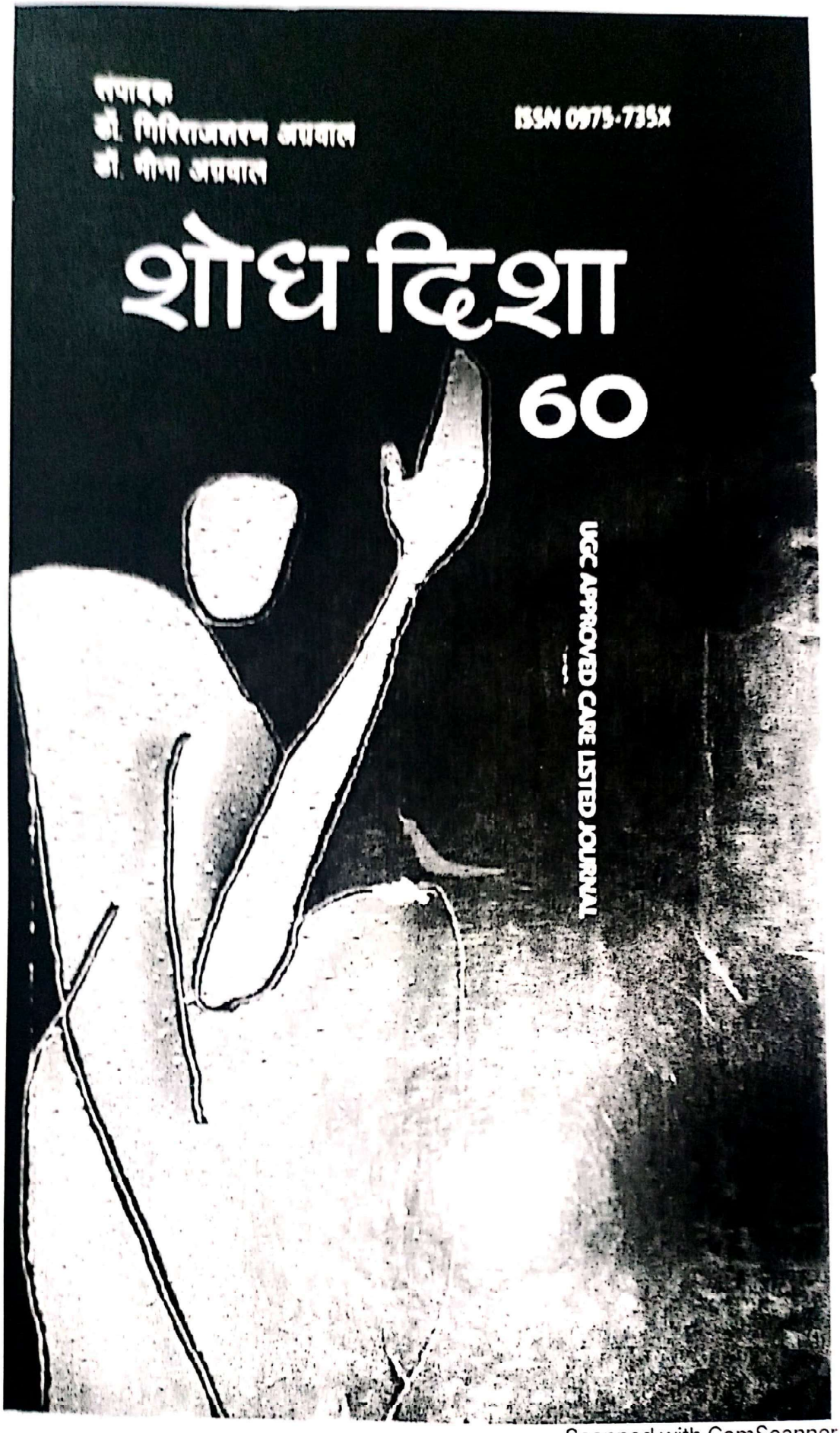

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ISSN 0975-735X

शोध दिशा

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से अनुदान प्राप्त

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 60/5 अक्टूबर-दिसंबर 2022 500.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय

हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 0124-4076565, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वेब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
वी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर शेष
प्रमोद सागर

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
09557746346
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क

आजीवन (दस वर्ष): छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : एक हजार रुपए
यह प्रति : पाँच सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री में संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका में संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसेट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 में मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

रजवार साहिब गुरु रामराय की स्थापत्य कला एवं चित्रकला का विश्लेषणात्मक
अध्ययन/ डॉ॰ दिलीप कुमार कुशवाहा, चन्द्रशेखर 282
ब्रिटिशयुगीन रायपुर जिले की जमींदारियों का भू-बंदोबस्त एवं भू राजस्व नीति
डॉ॰ डी॰एन॰ खुटे, अदिति श्रीवास्तव 289
गढ़वाल हिमालय के लोकदेवताओं की नृत्यमयी विशिष्ट पूजन पद्धति व
जागरण गीत/ डॉ॰डी॰एस॰ भण्डारी 287
आचार्य विष्णुकांत शास्त्री की आलोचना दृष्टि और तुलसी के राम/
मनीष कुमार भारती, डॉ॰ अंजनी कुमार श्रीवास्तव 305
किन्नर व्यथा : हम नर हैं या नारी/ डॉ॰ मिनी ए॰ आर 312
योग अभ्यास का निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य,
अवधान एवं शैक्षिक निष्पादन पर प्रभाव/ डॉ॰ वंदना सिंह, मीना पांडेय 315
रामचरितमानस में तुलसी की लोकमंगल अवधारणा/ श्रीमती पार्वती 319
प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था और नारी : एक दृष्टि/ डॉ॰ रेखा राजपूत 324
मुगलकालीन सांस्कृतिक गतिविधियाँ : हुमायूँनामा के विशेष संदर्भ में
रेनू देवी, डॉ॰ अमिता शुक्ला 331
'इक आग का दरिया है' उपन्यास में मनोविकृति 'फोबिया' का चित्रण/
सुरिन्दर कौर 338
ताराबाई शिंदे : आधुनिक भारत की प्रखर नारीवादी विचारक/ डॉ॰ स्वाती ठाकुर 341
'आपका बंटी' में चित्रित बाल-मनोविज्ञान/ सुमन 346
बाल अधिकार और समाज/ डॉ॰ उदयपाल सिंह 352
शिक्षा और विद्या के समन्वय से व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास/
वरुण कुमार, डॉ॰ रमा शर्मा 357
औद्योगिक मजदूरों का चित्रण करनेवाली शेखर जोशी की कहानियाँ/
डॉ॰ विजय सिंह 362
जनसंपर्क का बदलता स्वरूप और सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन :
एक अध्ययन/ सुधाकर शुक्ला, डॉ॰ नरेन्द्र कौशिक 367
भारतीय संवैधानिक प्रावधान एवं महिला सशक्तिकरण मे गैर सरकारी संगटन
की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन/अरुण कुमार 373

Scanned with CamScanner

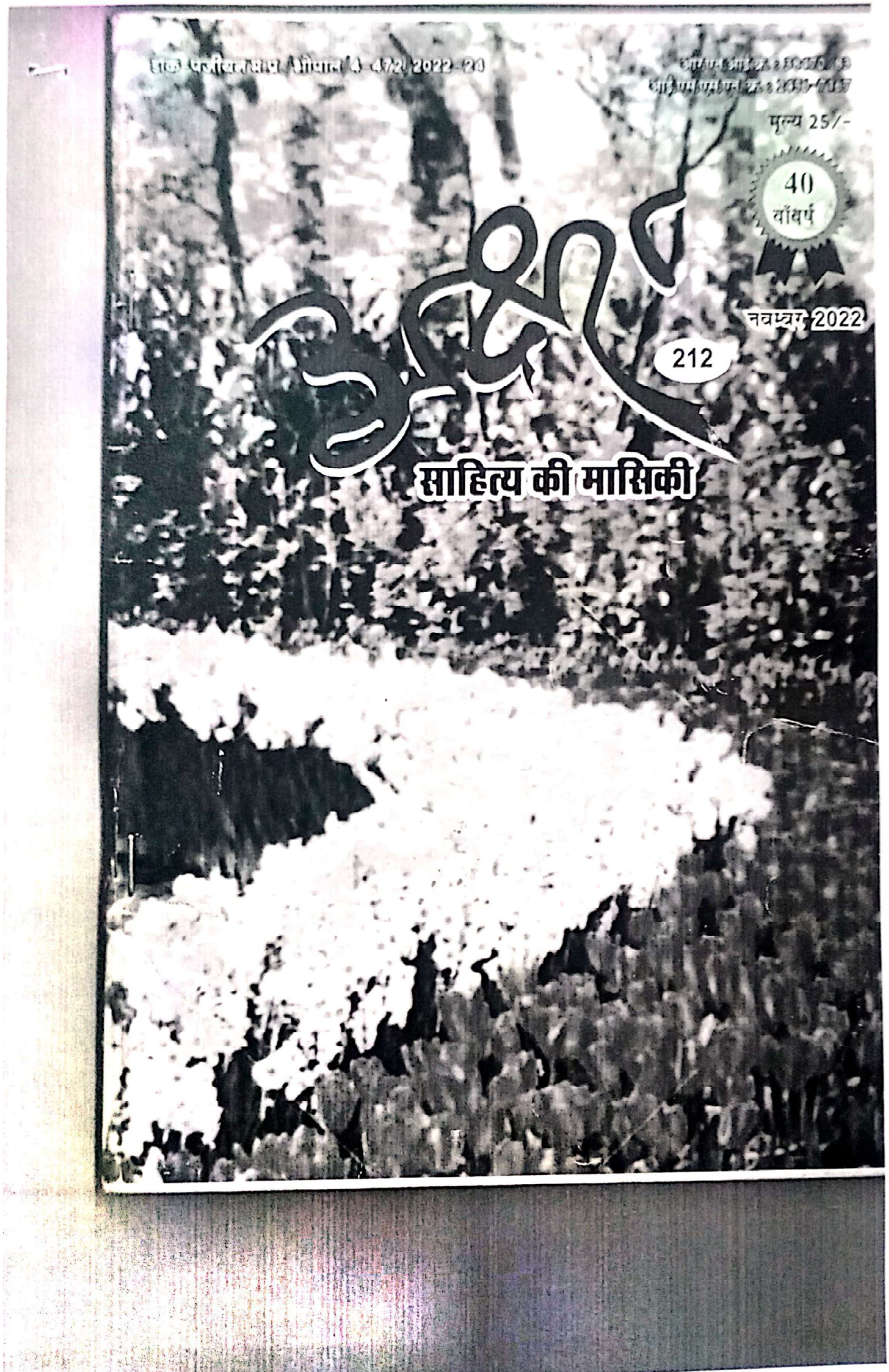

डाक पंजीयन म.प्र. भोपाल/4-472/2022-24
मूल्य 25/-
40
वाँ वर्ष
नवम्बर 2022
212
साहित्य की मासिकी

अक्षरा

अंक 212 नवम्बर 2022

सम्पादकीय

धरोहर

टोकरी भर मिट्टी : माधवराव सप्रे 7

सबद निरंतर

कहानी लिखना : एक निजी दास्तान : रमेशचन्द्र शाह 9

आलेख

'आधुनिक नारी' प्राचीन विचारधारा का : डॉ. मिनी ए. आर 15

आज की कहानी : संतोष चौबे 17

कहानी

भारतीय साहित्य में राधा और कृष्ण : गोपाल जी गुप्त 22

समुद्र और सूर्य के बीच : हिमांशु जोशी

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै : मालती जोशी 26

खाली लिफाफा : राजी सेठ 31

वाचाल सन्नाटे : सूर्यबाला 38

परीक्षित सत्य : सूर्यकांत नागर 45

जंगल की जीत : रमेश दवे 49

मुझे ले चलो: भूखी हूँ : उषाकिरण खान 54

आखर संगीत : प्रकाश मनु 58

रिहाई : अलका सिन्हा 64

पत्ते : उर्मिला शिरीष 70

विदाई : स्वाति तिवारी 75

हैप्पी न्यू इयर : शुभदा मिश्र 81

कारी तुम फिर मिलना : उर्मिला शुक्ल 91

संदूक : शीला मिश्रा 97

बेलन वाली : नीता श्रीवास्तव 101

अनुवाद

यशोदा (उड़िया कहानी) : मूल : परेश पटनायक,
अनु. : शंकरलाल पुरोहित 104

पत्रांश 110

Scanned with CamScanner

ISBN 2278 - 6880
Approved by UGC

संग्रथन

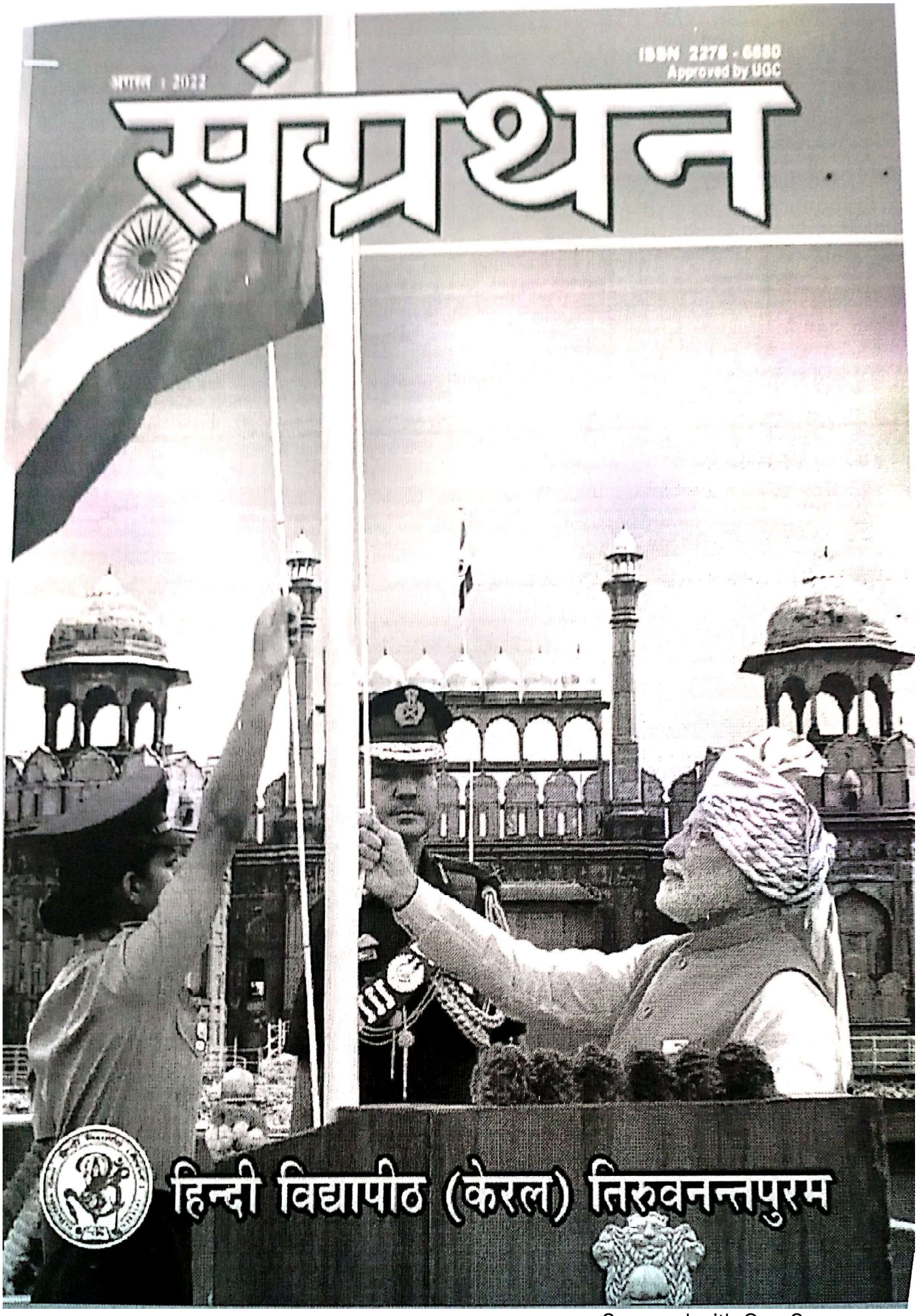

हिन्दी विद्यापीठ (केरल) तिरुवनन्तपुरम

Scanned with CamScanner

संग्रथन का संरक्षक मण्डल

आचार्य [illegible], हिन्दी विश्व गौरव सम्मान, संग्रथन के प्रणेता एवं प्रकाशक, ग्वालियर (म.प्र.), मो-[illegible]
प्रो.(डॉ.) [illegible], विश्वविद्यालय हिन्दी साहित्यकार एवं शिक्षाविद्, [illegible]
श्री [illegible], [illegible] हिन्दी अकादमी [illegible]
श्री [illegible] (उ.प्र.) डॉ. [illegible] के.

सम्पादक मण्डल

प्रोफ. [illegible] | प्रोफ. ए. मीरा साहिब
डॉ. एस. एस. राधाकृष्णन पिल्लै | श्री के. जनार्दनन नायर
डॉ. पी. जे. प्रसन्नकुमारी | प्रोफ. एन. लक्ष्मी
डॉ. श्रीलता के | डॉ. सुनिलकुमार एस
डॉ. सुमा एस | डॉ. सोफिया राजन

इस अंक में....

संपादकीय : भारत का ७६वीं स्वतंत्रता दिवस अमृतोत्सव के माहौल में	डॉ.वी.वी.विश्वम्	5-6
मन की बात (जुलाई० २०२२)	श्री नरेन्द्र मोदी	7-13
वी.के.एन.: हास्य को मानवीय भावों पर विलाप तथा अधिनायकवाद के प्रतिरोध का शस्त्र बनानेवाला अनन्य मनीषी लेखक	प्रोफ.टी.के.प्रभाकरन	14-16
दैनिक भास्कर एवं दैनिक जागरण समाचारपत्र में विज्ञान एवं पर्यावरण समाचारों के पठनीयता तत्वों का अध्ययन	डॉ.जयपाल मेहरा	17-24
'इतिहास चक्र' नाटक और वर्तमान स्थिति	डॉ.रम्या जोसफ	25-27
नारी जीवन का आत्मसंघर्ष : 'पीली आँधी' के संदर्भ में	डॉ.एन.पाजी	28-31
'अस्थि फूल' के पात्र : एक परिचय	डॉ.आशा.जी.	31-34
'हाइकु' में चित्रित सामाजिक समस्याएँ	डॉ.रीनाकुमारी.वी.एल.	35-37
हदों-सरहदों को पार करती स्त्री-शक्ति : 'रेत समाधि'	डॉ.सुमा.एस.	38-42
मोहनराकेश की कहानियों में नारीपात्र : विहंगम दृष्टि	शांति.सी.	42-45
स्वयंप्रकाश की कहानियों के चुनिंदा स्त्री-पात्र	देवीकृष्णा.पी.	46-48
पाठकों के पत्र		48
'शहर सो रहा है' निबंध संग्रह का विश्लेषणात्मक अध्ययन	रोपिनी.एस.	49-51
अस्पृश्यता के प्रति आवाज़ : 'दहाड उठा था सिंह' में	डॉ.मिनी.ए.आर.	51-54

मुखचित्र - लाल किले में तिरंगा फहराते हुए भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी

Scanned with CamScanner

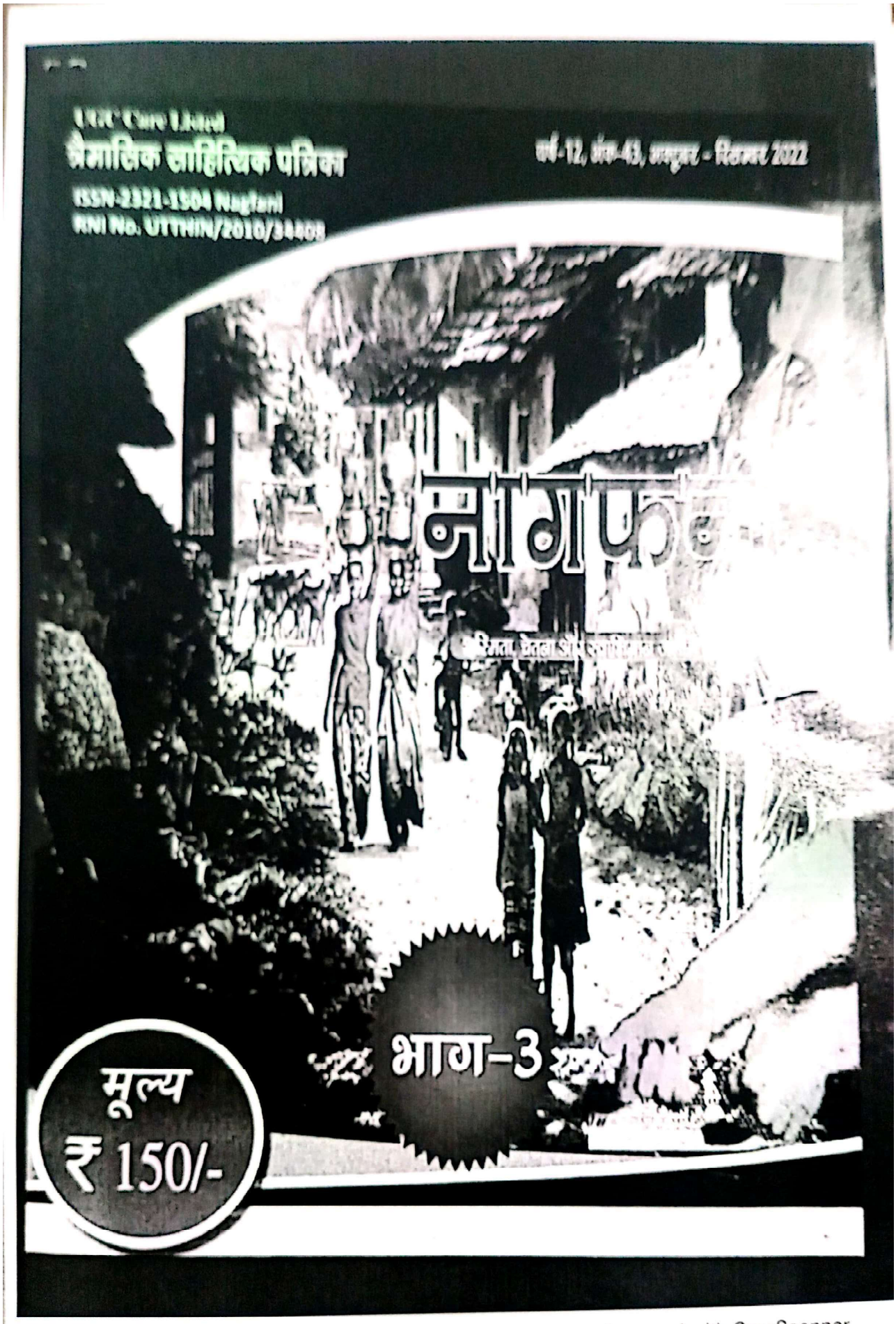

UGC Care Listed
त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani
RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष-12, अंक-43, अक्टूबर - दिसम्बर 2022

नागफ

भाग-3

मूल्य
₹ 150/-

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सम्पादकीय

साहित्यिक विमर्श

साहित्यिक विमर्श 7-8

1 [illegible] 8-10

2 [illegible]-डॉ.राम [illegible] 11-12

3 [illegible]-डॉ.[illegible] पी.पाटिल 12-13

4 [illegible]-डॉ.शेफाली बी.टी. 14-15

5 [illegible]-डॉ.सुशीला 16-17

6 [illegible]-डॉ.हरे राम सिंह 18-19

7 [illegible] त्रिपाठी 20-21

8 [illegible]-डॉ.[illegible] हबीब 21-22

9 [illegible]-डॉ.अखिलेन्द्र प्रताप सिंह 23-24

10 [illegible]-डॉ.जयटी इमानुएल 24-25

11 [illegible]-डॉ.सुषमा कुमारी 25-26

12 [illegible]-डॉ.[illegible] कुमारी हलवाए 27-28

13 [illegible] कल्पना एन.&डॉ.बलविंदर कौर 29

14 [illegible]-डॉ.हेमलता कांचनकर 30-31

15 [illegible]-डॉ.मीना मिलिंद ठाकुर 32-34

16 [illegible]-डॉ.एन.पी.प्रजापति 35-37

17 [illegible]-डॉ.एस.प्रीति 37-39

18 साहित्य में [illegible]-डॉ.[illegible] शर्मा 39-40

19 [illegible] सांस्कृतिक [illegible]-डॉ.नीरजा शर्मा 40-41

20 [illegible]-डॉ.ए.एस.सतीश 42-43

21 [illegible] साहित्य-डॉ.सिन्धु टी.आई 43-45

22 [illegible] की शोध-साधना-अनिल कुमार पाण्डेय 45-47

23 [illegible] परिवेश-मधु वारांद्रेयन 47-49

24 [illegible] विशेष सन्दर्भ में-रीतिका पाण्डेय& डॉ.सत्य प्रकाश पॉल 50-51

25 साहित्य और [illegible] विशेष सन्दर्भ में-डॉ.आलोक कुमार सिंह 52-53

26 [illegible] अनुवाद-डॉ.श्रीराम हनुमंत [illegible]& प्रा.संजय गहिनी नाथ मोराले 54-55

27 [illegible] उपन्यास [illegible] में नैतिक मूल्य-नवल पाल 56-57

28 [illegible] उपन्यास [illegible] में भारतीय संस्कृति-सुकेश कुमारी 58-59

29 [illegible] में निहित सामाजिक यथार्थ-कुलदीप 60-61

30 [illegible] कविताओं में पारिस्थितिक चेतना-अश्वती.एस 62-64

31 [illegible] मौत मिले, पर माटी में..' उपन्यास में श्रमिक जीवन के दुःखांत स्वर-ओम प्रकाश 64-66

32 [illegible] नाटक में अभिव्यक्त राजनीतिक विसंगतियों पर व्यंग्य-संदीप हंसराज शिंदे 67-69

33 [illegible] लोकगीतों में वर्णित जीवन और प्रकृति चित्रण-आशा शर्मा 69-71

34 सामाजिक न्याय की [illegible] और हिंदी उपन्यास -जितेंद्र कुमार यादव 72

35 समकालीन कविताओं में पर्यावरण- डॉ.मिनी ए. आर. 73-74

36 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में घटते नैतिक व सांस्कृतिक मूल्य,श्री रामचरितमानस के संदर्भ में-श्रीमती संगीता समाधिया 74-75

37 [illegible] उपन्यास में अभिव्यक्त किसान-जीवन-राजेंद्र मीना 76-77

38 [illegible] के जीवन चरितात्मक उपन्यासों में कबीर, तुलसी और बिहारी-डॉ.कनक लता रिद्धि 78-79

39 शिवनारायण [illegible] की [illegible] में निहित जीवन संदेश-सुशील कुमार तिवारी &डॉ.हरिणी रानी आगर 79-81

40 [illegible] की कहानियों में [illegible] सामाजिक चेतना-सुश्री मदालसा मणि त्रिपाठी& डॉ.विश्वजीत कुमार मिश्र 81-82

41 [illegible] हिंदी का नामकरण एवं [illegible] साहित्यकार-शिल्पा दत्त 83-84

42 भारतीय समाज में स्त्री और उसके स्वाभिमान की वास्तविकता:उषा प्रियंवदा की वापसी कहानी के संदर्भ में-नितुश्री दास 84-85

43 [illegible] एक मूल्यांकन-डॉ.श्रीनिवास वी. शेणिव 86-87

44 [illegible] में संवेदना और [illegible] चेतना पक्ष-डॉ.राजकुमारी 87-88

45 'जीवन [illegible]' आत्मकथा में आंबेडकरवादी चेतना-डॉ.गुदनर दत्ता राजेराव

स्त्री विमर्श

1. [illegible] से गुमनाम दलित-आदिवासी वीरांगनाएं-डॉ.भगवान गव्हाड़े 88-89

2. [illegible] की आत्मकथा में अंतर्व्यथा की [illegible]-अनिमा विश्वास 92-93

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अक्षर

अंक-210 सितम्बर-2022

सम्पादकीय

धरोहर

पानी की जाति : **विष्णु प्रभाकर**

सबद निरन्तर

जाने कितने सूर्योदय : **रमेशचन्द्र शाह** 9

आलेख

ज्ञान-क्षितिज-विस्तार के लिए अनुवाद : **सुशील त्रिवेदी** 13

भारतीय परंपरा में कामसूत्र और इसकी प्रासंगिकता : **संदीप अवस्थी** 17

प्रवासी हिंदी साहित्य में गिरमिटिया मजदूरों का संघर्ष : **डॉ. के. भार्गवन** 24

समय और विचार - 14

कपिल, गौतम, कणाद : ऋषियों की विज्ञान-प्रज्ञा : **रमेश दवे** 28

चुडैल-अनामिका की कविता- एक पठन : **डॉ. मिनी. ए. आर** 34

मालती जोशी पर विशेष

आत्मकथ्य : **मालती जोशी** 36

सबद-बन उर-अंतर लागे : **मालती जोशी** 38

गीत : **मालती जोशी** 48

सोद्देश्य लेखन की कालजयी यात्रा : **मुकेश वर्मा** 49

नागेगत संवेदनाओं की प्रवक्ता : **सूर्यकांत नागर** 53

तस्वीरों के आईने से : **ऋषिकेश जोशी** 57

प्रक्रिया के बंधनों से मुक्त रचनात्मकता : **सच्चिदानंद जोशी** 61

हिंदी कहानी की ताजदार साम्राज्ञी : **सूर्यबाला** 65

लेखन के विराट फलक का अद्भुत व्यक्तित्व : **मंगला रामचंद्रन** 67

मालती जी की कहानियाँ-एक गृहिणी की नजर में : **कमल चंद्रा** 70

विशिष्ट भी, सार्थक भी : मालती जोशी : **देवेन्द्र दीपक** 72

मालती जी की कहानियों में कटाक्ष के स्वर : **कुमकुम गुप्ता** 75

सादगी और सौम्यता की अपनी गूँज होती है : **निर्मला डोसी** 77

Scanned with CamScanner

₹ 30/-

साहित्य अमृत

सितंबर 2022 • साहित्य एवं संस्कृति का संवाहक • मासिक • पृष्ठ 84 • ISSN 2455-1171

Scanned with CamScanner

साहित्य अमृत

मासिक

भाद्रपद-आश्विन, संवत्-२०७९ ❖ सितंबर २०२२

वर्ष-२८ ❖ अंक-२ ❖ पृष्ठ ८४ | यू.जी.सी.-केयर लिस्ट में उल्लिखित | ISSN 2455-1171

संस्थापक संपादक
पं. विद्यानिवास मिश्र

निवर्तमान संपादक
डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी
श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

संस्थापक संपादक (प्रबंध)
श्री श्यामसुंदर

प्रबंध संपादक
पीयूष कुमार

संपादक
लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

संयुक्त संपादक
डॉ. हेमंत कुकरेती

उप संपादक
उर्वशी अग्रवाल 'उर्वी'

कार्यालय
४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-०२
फोन : ०११-२३२८९७७७
०८४४८६१२२६९
इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

शुल्क
एक अंक—₹ ३०
वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००
वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००
विदेश में
एक अंक—चार यू.एस. डॉलर (US$4)
वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर (US$45)

साहित्य अमृत के बैंक खाते का विवरण
बैंक ऑफ इंडिया
खाता सं. : 600120110001052
IFSC : BKID0006001

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी पीयूष कुमार द्वारा ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२ से प्रकाशित एवं न्यू प्रिंट इंडिया प्रा.लि., ८/४-बी, साहिबाबाद इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-IV, गाजियाबाद-२०१०१० द्वारा मुद्रित।

✍ संपादकीय
विकासशील से विकसित की यात्रा में... ४
✍ प्रतिस्मृति
कफन चोर/ *धर्मवीर भारती* ६
✍ कहानी
कैरियरिस्ट/ *रूपसिंह चंदेल* ८
तारणहार/ *सुनीता शानू* २०
प्रकृति का देवता/ *सुषमा मुनींद्र* ३८
डॉटर 'स डे/ *पूजा महाजन* ७०
✍ लघुकथा
नोक-झोंक/ *ऋचा उपाध्याय* ७१
✍ आलेख
संयुक्त राष्ट्र की भाषा बने हिंदी/ *गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'* १२
कवि बनारसीदास के साहित्य में सामाजिक चेतना/ *निशांत जैन* २२
पारिवारिक विघटन रोकने में रामचरितमानस की भूमिका/ *श्रद्धा सक्सेना* २६
भारतीय शिक्षा, शिक्षण और इसकी चुनौतियाँ/ *राजेश कुमार ठाकुर* ४२
साहित्य की समृद्ध विधा 'दोहा' और कर्नल वशिष्ठ/ *विजय कुमार तिवारी* ४९
लोक-जीवन में देश-काल का चिंतन/ *मयंक मुरारी* ५८
एकलव्य- एक नया परिवेश ७४
डॉ. मिनी ए आर
✍ कविता
अँजुरी भर गीत/ *विष्णु सक्सेना* १४
दोहों का संसार/ *उर्वशी अग्रवाल 'उर्वी'* २८
गजलें/ *रेणु हुसैन* ३३
ग़ज़लें/ *विज्ञान व्रत* ४९
अभी नींद से जागे हैं/ *प्रशांत उपाध्याय* ५५
आई नई हवाएँ/ *रामगोपाल शर्मा 'दिनेश'* ५७
फिजीशियन एवं सर्जन/ *अनिल चतुर्वेदी* ६२
कविताएँ/ *ब्रज किशोर बक्शी* ६३
प्रोत्साहन स्नेह भूरि-भूरि/ *श्रीधर द्विवेदी* ७५
✍ राम झरोखे बैठ के
मौसम के तेज-तर्रार तेवर/ *गोपाल चतुर्वेदी* ३०
✍ संस्मरण
लता ताई/ *कानन झींगन* १६
मेरे आदर्श शिक्षक : मातादीन शर्मा/ *भैरूँलाल गर्ग* ३४
✍ साहित्य का भारतीय परिपार्श्व
पूमातै पोन्नम्मा/ *उण्णिकृष्णन मनक्कल* ४६
✍ रेखाचित्र
तपन में डूबा उदास सूरज/ *अंजीव अंजुम* ५२
✍ व्यंग्य
ऑनरेरी पी-एच.डी. का खुला रहस्य/ *आलोक सक्सेना* ५६
✍ ललित-निबंध
महाश्वेता रात्रि में साहित्य-वीणा/ *श्रीराम परिहार* ६४
✍ साहित्य का विश्व परिपार्श्व
घोड़ागाड़ी का स्टैंड/ *चार्ल्स डिकेंस* ६८
✍ लोक-साहित्य
ब्रज के लोकगीतों में सामाजिक चेतना/ *हरदेव सिंह 'निर्मौलिया'* ७२
✍ वर्ग-पहेली ७६
✍ पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ७७
✍ साहित्यिक गतिविधियाँ ७९

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

Scanned with CamScanner

भाग – 01

नागफनी

A Peer Reviewed Refereed Journal
(अस्मिता चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)
UGC Care Listed त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504NagfaniRNI No.UTTHIN/2010/34408

संपादक
सपना सोनकर

सह संपादक
रूपनारायण सोनकर

Co Editor(English)
Prof.Rajesh karankal
Dr.Santosh Kumar Sonkar

कार्यकारी संपादक
डॉ.एन.पी.प्रजापति
प्रोफेसर बलिराम धापसे

वर्ष-12 अंक 43,अक्तूबर-दिसम्बर -2022

सलाहकार मण्डल (Peer Review Comittee)

प्रोफेसर विष्णु सरवदे, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर आर. जयचंद्रन तिरुअनंतपुरम (केरल)
प्रोफेसर दिनेश कुशवाह,रीवा (मध्य प्रदेश)
डॉ.एन. एम. परमार, बड़ौदा (गुजरात)
प्रो. दिलीप कुमार मेहरा, बी.बी.नगर (गुजरात)
डॉ.उमाकांत हजारिका, शिवसागर(असम)
डॉ. आर. कनागसेल्वम, इरोड (तमिलनाडु)
प्रोफेसर संजय एल. मादार,धारवाड़ (कर्नाटक)
प्रोफेसर गोविन्द बुरसे, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ.दादा साहेब सालुनके, महाराष्ट्र (औरंगाबाद)
प्रोफेसर अलका गड़करी, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
डॉ. साहिरा बानो बी. बोरगल, हैदराबाद (तेलंगाना)
प्रोफेसर मोहनलाल 'आर्य' मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)
डॉ.जी.व्ही .रत्नाकर हैदराबाद(तेलंगाना)

प्रकाशन/मुद्रण

प्रकाशक रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ.एन.पी.प्रजापति एवं प्रोफेसर बलिराम धापसे द्वारा नमन प्रकाशन–423/Aअंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली 11002 में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य।

मुख पृष्ठ– उत्कर्ष प्रजापति, सिंगरौली - मध्यप्रदेश

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

दून व्यू कॉटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी -248179, उत्तराखण्ड, दूरभाष : 0135-6457809 मो.0941077718

शाखा कार्यालय

पी.डब्ल्यू. डी. आर. -62 ए ब्लॉक कॉलोनी बैदन, जिला-सिंगरौली म. प्र. पिन-486886 मो. 09752998467
सहयोग राशि -150/-रुपये, वार्षिक सदस्यता शुल्क (संस्था के लिए)-1500/-रुपये, पंच वार्षिक सदस्यता शुल्क (व्यक्ति के लिए)-3000/-रुपये, पंच वार्षिक संस्था और पुस्तकालयों के लिए –3500/-रुपये, विदेशों में$50 आजीवन व्यक्ति-6000/-रुपये,संस्था-10,000/-रुपये।

सदस्यता शुल्क एवं सहयोग राशि-इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक–A/C –8367100138282 IFSC Code-IPOS0000001 Branch-sidhi, NIRPAT PRASAD PRAJAPATI

नोट:-पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति आवश्यक है। संपादक-संचालक पूर्णतया अवैतनिक एवं अध्यवसायी हैं।'नागफनी'में प्रकाशित शोध-पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं। जिनमेंसंपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।'नागफनी' से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनीऑर्डर, बैंक/चेक/बैंक ट्रांसफर/ई-पेमेंट आदि से किए जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चेक में बैंक कमीशन 50/-अतिरिक्त जोड़ें दें।

लेख भेजने के लिए –Mail-ID- nagfani81@gmail.com
पत्रिका के बारे मे विस्तार से जानने के लिए देखें Website:–http:naagfani.com

Scanned with CamScanner

स्त्री विमर्श

1.पाश्चात्य स्त्री-विमर्श का इतिहास -**डॉ.महेश दवंगे** 100-121
2.भारत में स्त्री शिक्षा और उनके अधिकार-**डॉ.मोहन लाल 'आर्य'** 102-103
3.भारतीय नारी और सामाजिक मान्यताएं-**डॉ.अरविंद अंबादास घोडके** 103-104
4.'औरतें': स्त्री जीवन की व्यथा का ब्यौरा-**डॉ.अन्सा ए** 105-106
5.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'गुनाह बेगुनाह' में नारी चेतना-**अंजलि** 106-108
6.हंडा में दबी हुई स्त्री'-**डॉ.मिनी ए.आर** 109
7.दलित स्त्री आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में चित्रित सांस्कृतिक परिदृश्य-**नीतामणि बरदले/नूरजहान रहमातुल्लाह** 110-111
8.लोक कथाओं में चित्रित स्त्री जीवन: मिज़ो लोक कथाओं के संदर्भ में-**डॉ.वंदना भारती** 111-113
9.आधुनिक हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श और स्त्री संघर्ष: महिला उपन्यासकारों के विशेष संदर्भ में-**सुशीला/डॉ.मंजुला तोमर** 114-115
10.'दक्षिणी कामरूप की 'गाथा'उपन्यास में पुरुष तांत्रिक समाज व्यवस्था का वर्णन-**किरण कलिता** 116-117
11.हिंदी के समकालीन स्त्री आत्मकथाओं में अभिव्यक्त स्त्री-संघर्ष -**सेलीष्या जोसफ/डॉ.मेरली के पुन्नूस** 118-119
12.अल्मा कबूतरी उपन्यास में कबूतरा स्त्री-**मयुरी मजुमदार** 120-121
13.हिन्दी के आंचलिक उपन्यासो में चित्रित नारी जीवन-**विनीता ठकरेले लोधी /डॉ.समयलाल प्रजापति** 122-123
14.इक्कीसवीं सदी के हिंदी लेखिकाओ के उपन्यासों में नारी- **बबीता कुमारी** 124-125
15.नारी-अस्मिता के प्रश्न और 'ध्रुवस्वामिनी'-**डॉ.समरेन्द्र कुमार** 126-127
16.अब बाजार स्त्री के कदमों में है : अनीता वर्मा की कविता-**कार्तिक राय** 128-129
17.पंकज सुबीर की कहानियों में स्त्री छवि-**डिन्सी जोर्ज/डॉ.जी.शान्ती** 130-131
18.मैला आँचल के स्त्री पात्र-**डॉ.माया मगरे-लक्का** 131-133
19.हिन्दी और तेलुगु के नारी उपन्यासों में सामाजिक आन्दोलन का प्रभाव(चुने हुए उपन्यासों के संदर्भ में)-**बी.रविंदर** 133-135
20.महात्मा बुद्ध के शैक्षिक विचारों में नारी शिक्षा की स्थिति का एक अध्ययन-**प्रज्ञा बौद्ध /प्रो रामबली यादव** 135-137
21. मेहरून्निसा परवेज के उपन्यासों में स्त्री विमर्श-**सुश्री दुर्गावती** 138-139

दलित विमर्श

1.'हमारे हिस्से का सूरज' में अभिव्यक्त दलित चेतना एवं सामाजिक परिवर्तन-**डॉ. जी. वी. रत्नाकर** 140-141
2.पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए डॉ. बी. आर. अम्बेडकर प्रतिपादित विकास रणनीति की समीक्षा-**डॉ.धीरज कदम** 141-144
3..डॉ.तुलसी राम की आत्मकथा 'मुर्दहिया' में अंधविश्वास-**डॉ.मृत्युंजय कोईरी** 144-146
4.विमर्श नहीं दलित चेतना है मुक्ति का आधार(ऐतिहासिक व सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य)-**डॉ.रविन्द्र गासो** 147
5.'सामाजिक न्याय और अस्मिता संघर्ष के लिए "मादिगा दंडोरा" आंदोलन'-**डॉ. जी. राजु** 148-149
6.डॉ.अंबेडकर के द्वारा नारी उत्थान हेतु किये गये प्रयासों एवं हिंदू कोड बिल का संक्षिप्त मूल्यांकन-**गृहशोभा/डॉ.अनिल कुमार दीक्षित** 149-151
7.समतावाद की नींव रखता 'प्रत्यंचा'उपन्यास'-**आशा त्रिपाठी/प्रो.दिनेश कुशवाह** 152-153
8.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में दलित चेतना- **सुनीता सिंह** 153-155
9.मुसहर समुदाय का जीवन-संघर्ष-**राम नाथ कुमार** 156-158
10.दलित साहित्य की वैचारिकी-**अंकित कुमार वर्मा** 159-161
11.हिन्दी दलित नाटकों में अस्मिताई संघर्ष-**विभिषण कुमार** 162-163

आदिवासी विमर्श

1.पूनम वासम की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी जीवन-दृष्टि-**लाली कुमारी** 164-165
2.राष्ट्र निर्माण के कार्य मे आदिवासी नायकों का योगदान-**डॉ.मनोहर भी.येरकलवार** 166-168
3.आदिवासी मराठी साहित्य:एक विचार(महाराष्ट्र के आदिवासी जीवन पर आधारित काव्य संग्रह 'वनवासी'के संदर्भ में)-**डॉ. नितीन कुमार जानबाजी रामटेके** 168-169

किन्नर विमर्श

1.अस्तित्व की तलाश में सिमरन: किन्नर अस्मिता का जीवंत दस्तावेज-**डॉ.नीरज शर्मा** 170-171
2.किन्नर समाज और मीडिया-**डॉ.मीनाक्षी बी. पाटील** 172-173
3.भारतीय समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण-**घनश्याम कुशवाहा** 174-176
4.'नाला सोपारा': अभिशप्त जीवन की त्रासदी-**डॉ.गरिमा तिवारी** 177-179

विविध विमर्श

1.उच्च शिक्षा : हिंदी भाषा की स्थिति एवं चुनौतियाँ(दक्षिण भारत के हैदराबाद महानगर के संदर्भ में)-**डॉ.पठान रहीम खान** 180-182
2.पंचयातों में महिला आरक्षण, के 30 वर्ष:सशक्तिकरण यथार्थ या मिथक-**डॉ. संजय यादव** 183-185
3.भूमि उपयोग का अर्थ एवं महत्व एक भौगोलिक अध्ययन -**प्रदीप कुमार/डॉ. सालिक सिंह** 186-187
4.भारत के लोकतांत्रिक यात्रा में राजनैतिक पक्ष की भूमिका (स्वतंत्रता पूर्व एवं पाश्चात्य के विशेष संदर्भ में)-**डॉ.शशिकांत जे. चवरे** 188-192
5समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में वृद्धजनों की समस्याओं का विश्लेषण(बनबसा नगर पंचायत क्षेत्र के विशेष संदर्भ में)- **रेनू बाला** 193-195
6.प्राकृतिक आपदाओं का मानव जीवन के आर्थिक विकास पर दुष्प्रभाव तथा इसका प्रबंन्ध झुन्झुनू जिले के सन्दर्भ में-**रामावतार वर्मा-डॉ. सालिक सिंह** 196-197
7.प्रथम लंदन यात्रा के दौरान मोहनदास के अनुभव: एस.एस. क्लाइड जहाज के संदर्भ में-**सूर्य प्रकाश** 197-198
8.झुन्झुनू जिले में पर्यावरण अवनयन के कारकों एवं होने वाली हानियों के प्रबंधन-एक भौगोलिक अध्ययन-**सवित राज/डॉ.सालिक सिंह** 199-201

Scanned with CamScanner

3.3.1 RESEARCH ARTICLES IN JOURNAL

Dr. GOPIKA K K

ASSISTANT PROFESSOR,

UG AND RESEARCH DEPARTMENT OF HINDI,

PAYYANUR COLLEGE, PAYYANUR.

41) दलित जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति : धरती धन न अपना
डॉ. हिमानी सिंह, कोटा (राज.) ||145

42) हिंदी साहित्य में चित्रित दलित विमर्श
किर्ती कशिनाथ होसुरकर, औरंगाबाद ||149

43) दलित इतिहास और 'दहाड उठा था सिंह'
Dr Gopika K K, Kannur, Kerala ||152

44) बीसवीं सदी की दलित कविता का आत्म–संघर्ष
डॉ. लियाकत मियाभाई शेख, औरंगाबाद, (महाराष्ट्र) ||155

45) वैदिक अनार्य नारी एवं आदिवासी नारी में दलित विमर्श
डॉ. मितेशकुमार नटवरलाल पटेल, पाटण (उ.गु.) ||159

46) राकेश वत्स के उपन्यास : दलित –चेतना की अभिव्यक्ति और शोषण का खंडन
डॉ.के.नीरजा, राजमहेंद्रवरम, आंध्र प्रदेश ||162

47) हिंदी दलित कविता की भूमिका
प्रा.डॉ.प्रकाश सदाशिव सूर्यवंशी, जि.परभणी ||164

48) ओमप्रकाश वाल्मीकि जी के काव्य में अभिव्यक्त दलित चिंतन
डॉ. प्रवीणकुमार न. चौगुले, सांगली ||167

49) मोहनदास नैमिशराय की कहानियों में अभिव्यक्त मानवाधिकार
डॉ प्रीति के, कण्णूर, केरला ||171

50) 'सदियों के बहते जख्म' काव्य संग्रह में अभिव्यक्त दलित चेतना
डॉ. संतोष विजय येरावार, जि. नांदेड ||175

51) दलित साहित्य के सामाजिक सरोकार
श्याम सिंह, मेरठ (उत्तर प्रदेश) ||178

52) ओम प्रकाश वाल्मीकि के काव्य में चित्रित विद्रोह के स्वर
डॉ शहनाज महेमुदशा सय्यद, जि. सांगली ||183

53) प्रेमचंद और दलित–विमर्श
डॉ. सिन्धु सुमन, सहरसा ||187

43

दलित इतिहास और 'दहाड उठा था सिंह'

Dr Gopika K K
Assistant Professor, Department of Hindi,
Payyanur College, Edat P O, Payyanur, Kannur, Kerala

****

विश्व के सामने विभिन्नता मे एकता को अपनी पहचान बनाये भारत में इस विभिन्नता में एकता को सभी ने माना है? क्या इस एकता की माला में सभी वर्ण, सभी जाति एक साथ पिरोए जा सकते है? अगर ऐसा संभव हो तो आज इस दलित समाज का मुद्दा हमारे सामने उभरकर नहीं आता। भीमराव अंबेदकर को चावदार तालाब के पानी के लिए संघर्ष ही न करना पड़ता। उस सिंह को कभी दहाड़ उठाता खड़ा नहीं होना पड़ता। अंबेदकरवादि विचारधारा से प्रेरित लेखिका अनिता भारती द्वारा २००२में लिखी गयी एक ऐतिहासिक एकांकी है 'दहाड उठा था सिंह'। दलित साहित्य का संबन्ध अंबेदकर के दलितवाद से है। अंबेदकर की राय में सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर उच्च नीचत्व मिटाए बिना दलित मुक्ति संभव नहीं है।अनिता भारती अपनी एकांकी में अंबेदकर के इतिहास को लिखकर दलित समाज को मुक्तिपथ दिखाने का प्रयास एकांकी के माध्यम से कर रही है।

ब्राह्मण को हिंदु समाज की वर्णयव्यवस्था ने एक ओर उच्च और श्रेष्ठ बनाया है तो दूसरी ओर शूद्रों को उनकी सेवा करनेवाला सेवक। भारतीय समाज में वर्णय व्यवस्था के कारण दलितों का हमेशा ही शोषण होता रहा है। जहाँ धर्म, तिरस्कार, घृणा तथा नकारात्मक विचार और व्यवहार से मानवता द्वारा एक वर्ग को निम्न स्तर पर निचोड़ दिया जाता है वहाँ उस वर्ग को अपने मानव होने के अस्तित्व को साबित करने के लिए बड़े संघर्ष और चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यही हुआ था चावदार तालाब के आंदोलन में भी। यह सिर्फ पानी पीने के लिए किया गया एक संघर्ष नहीं था, अपितु यह एक प्रतीक था अपने मानवीय अधिकारों को स्थापित करने का। इस चावदार तालाब के पानी के लिए अंबेदकर द्वारा किए गए महाड सत्याग्रह को अग्रणीय दलित महिला लेखिका अनीता भारती ने अपनी एकांकी दहाड उठाता सिंह में सफल और प्रभावमयी अभिव्यक्ति दी है। एकांकी दलित इतिहास को लिखती है।साहित्य और समाज से हाशियाकृत जनता का इतिहास निर्माण का प्रयास यहँ हो रहे है।दलितों के इतिहास को लिखना दलित साहित्य का लक्ष्य भी है। जिस प्रकार दलित आंदोलन और संस्थाएं दलित मुक्ति के लिए कार्यरत है उसी प्रकार दलित साहित्य को भी इसकेलिए कार्यरत क्षेत्र के रूप में स्वीकारा गया है। अर्थात दलित साहित्य दलित मुक्ति जैसे लक्ष्यों की पूर्ति के लिए लिखे जाते है। शरण कुमाल लिंबाले के अनुसार दलित लेखक सामाजिक सरोकार केदायित्व से लिखता है। उसके लेखन मे कार्यकर्ता का जोश और निष्ठा अभिव्यक्त होता है। दलित लेखक आंदोलन में कार्यरत सक्रिय कलाकार है। वह अपने साहित्य को आंदोलन मानता है।उसके सरोकार समस्त ब्रोकण मैंन से है। (दलित साहित्य:वेदना और विद्रोह,८३)

एकांकी की शुरुआत में हम देख सकते है कि नगरपालिका ने चावदार तालाब को सार्वजनिक रूप से खोलने पर भी वहाँ के अस्पृश्य सवर्णों के भय से तालाब का प्रयोग नहीं करते थे। अधिकार होने पर भी बरसों से अपने अदर पड़े दास मनोभाव को वे छोड़ नहीं पाते थे, क्योंकि वह विचार उनके मन मे रूढ़ हो गया था। इस मानसिक हालत से बाहर निकलना सिर्फ

3.3.1 RESEARCH ARTICLES IN JOURNAL

Dr. VISHNU THANKAPPAN

ASSISTANT PROFESSOR,

UG AND RESEARCH DEPARTMENT OF HINDI,

PAYYANUR COLLEGE, PAYYANUR.

16. कबीरदास : युग की माँग

डॉ. विष्णु तंकप्पन

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग
पय्यन्नूर कॉलेज, पय्यन्नूर

कबीर साहित्य की पुनः चर्चा की अगर ज़रूरत है तो यही उसके लिए सबसे उपयुक्त समय है। आज दुनिया बहुत ही संकटग्रस्त समय का सामना कर रही है। ऐसी एक संकटग्रस्तता जिसका सामना मध्ययुग में कबीर ने किया था। कबीर जैसे अक्खड़ क्रांतिकारी व्यक्तित्व का उदय जातियों, धर्मों, वर्णों आदि में विभाजित पाखंडी समाज के बीच में हुआ था। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो तथाकथित पाखंडी समाज ने कबीर को क्रांतिकारी बना दिया था। अगर ध्यान से देखा जाए तो वर्तमान स्थिति भी मध्ययुग से भिन्न नहीं है, बल्कि समस्याएँ ज्यादा जटिल हो गयी हैं। धर्म के नाम पर हर कहीं कोलाहल मच रहा है। धर्म को लेकर लोगों की मानसिकता संकुचित होती जा रही है। कबीर ने जिस धार्मिक एकता की चाह की थी वह आज टूटती जा रही है।

कबीर के विचारों पर दृष्टि डाले तो यह कह सकते हैं कि कबीर ने तत्कालीन समाज की संकटग्रस्तता को पहचाना और उसके विरुद्ध आवाज़ उठायी। मध्यकालीन समाज में बहुत अधिक कुरीतियाँ और कुप्रथाएँ विद्यमान थीं। दुनिया इसके प्रति अनभिज्ञ थी और आँखें मूंदकर इन सबको मानती थी। कबीर दुनिया की इस अज्ञता और अंधेपन को समझते थे और इसलिए उन्होंने कहा-

"यह जग अंधा मैं केहि समझावौ
घर की वस्तु नजर नहि आवत
दियना बारि के
ढूँढत अंधा।"[1]

कबीर ने धार्मिक एकता पर बल दिया

Scanned with CamScanner

...एवं आधुनिकाग्निविज्ञानस्य प्रायः सर्वे विषयाः वेदे सप्रमाणं ... ।

ग्रन्थसूची:–

1.वेदालङ्कार,जयदेव.,भारतीयदर्शनशास्त्र का इतिहास, ...भाग:,न्यू भारतीय बुक कर्पोरेशन, दिल्ली, २००६।
2.Coomaraswamy]Ananda-K-] A New Approach to the Vedas% An Essay in translation and eÛegesis] ...02 3.Jacob]Colonel-G-A-] A Concordance to the Principal Upanishads and Bhagavadgita]1999- 4.www-ancientindiansciences-in-

संदर्भ सूचि–

1.Sri Aurovindo] Bankim] Tilak] Dayananda] pp-57] 3rd 2.यजु. संहिता, ३३.४३ । 3. छान्दोग्योपनिषद्, ३.११.१–३ । 4.ऋक्.संहिता, ८.१४.५ । 5.तत्र, ...१.५ । 6."सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः।अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्।।ऋग्वेदभाष्यभूमिका । 7.यजुर्वेदः, १२.२४ 8.तत्र, १२.२५ । 9.ऋग्वेदः, १०.८२.३ । 10.तत्र, २.२.६ । 11. तत्र, ३.१.७ । 12.तत्र, २.२.६ । 13.तत्र, २.२.७ । 14.तत्र, ८.१६.७ । 15.तत्र, ८.६१.७ । 16.अथर्ववेदः, ६.४७.१ । 17.ऋग्वेदः, १.५६.१ 18.तत्र, १.५६.७ । 19.तत्र, २.११.५.३.१–५ । 20.तत्र, २.१.४–६,११ 21.यजुः,१५.३३.३४ । 22.ऋग्वेदः, १.५६.११–१२ । 23.तत्र, १.४४.१३ । 24.शतपथब्राह्मणं, ७.३.१.२६ । 25.यजुर्वेदः, ३.१०.१ । 26. ऋग्वेदः, ३.२६.२ । 27.यजुर्वेदः, ११.३२ । 28.ऋग्वेदः, ६.१६.१३ । 29.तत्र, ८.३.२३ । 30.यजुर्वेदः, १२.१८ । 31.तत्र, १७.६ । 32. अथर्ववेदः, ३.२१.७ ।

2.समकालीन हिन्दी कहानी में पुलिस और मानवाधिकार–

डॉ. विष्णु तंकप्पन

सहायक आचार्य,

पय्यन्नूर कॉलेज, पय्यन्नूर, केरला

पुलिस को नागरिकों के अधिकारों के रक्षक एवं उनके सेवक के रूप में पहचाना जाता है। जैसे कि पुलिस को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं, जिनको मौके और वारदातों के अनुसार प्रयोग किए जाते हैं। लेकिन इन अधिकारों का प्रयोग करते हुए पुलिस अपनी निर्धारित सीमा का उल्लंघन करते दिखाई देती हैं। ऐसे अवसर पर पुलिस पर कई आरोप उठाये जाते हैं। आज नागरिकों की रक्षा के लिए दिए गए अधिकारों का पुलिस द्वारा गलत इस्तेमाल हो रहा है। "कानून पुलिस को सी.आर.पी.सी. की धारा 46 के अनुसार कुछ निश्चित परिस्थितियों में लोगों को गिरफ्तार करने और यदि आवश्यक हो तो ऐसा करने के लिए बल प्रयोग का अधिकार देता है।"1 लेकिन इस प्रकार गिरफ्तारी और निरोध से युक्त व्यक्ति के भी कुछ हक और अधिकार याने मानवाधिकार होते हैं जिनका सम्मान करना भी पुलिस का दायित्व है। दुर्भाग्य है कि आज हमारे देश में अधिकाँश का उल्लंघन हो रहा है। नागरिकों को संकट में सहायता देने के बजाय पुलिस नियमों का उल्लंघन करके अत्याचार करने पर तुली है। अगर केरल की पुलिस व्यवस्था पर थोड़ा नजर डाले तो समान स्थिति नजर आएगी। "सन 2010 और 2015 के बीच केरल के पुलिस कर्मियों में 700 के खिलाफ क्रिमिनल केस फायल किया गया था। लेकिन आज इसकी संख्या 933 बन गयी है। इनमें 675 हवलदार है, 2 डि.आई.जी., 16 डी.वाई.एस.पी., 72सी.आई., 62 एस.आई., 82 ए.एस.आई. भी मौजूद है।"2 अपनी निजी मतलब के लिए आज वह गरीबों, मजदूरों, महिलाओं और अल्पसंख्यकों पर अत्याचार कर रही है। वर्दी के बलबूते पर वह बेकसूरों को गोली मारती है, महिलाओं का बलात्कार करती है, गरीबों को मार–पीटकर जुर्म कबूल करवाती है, गवाहों को डराती है। यह सब वह पूँजीपति, अमीर राजनीतिक नेताओं के लिए करती है या तो निजी स्वार्थ के लिए। पुलिस मानो एक दमनकारी ताकत के रूप में अपनी सालिम बल प्रयोग की हदें पार करती हुई नजर आती है। विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में जनता के अंतर पुलिस का खौफ इस कतर जारी है कि एक हमदर्द और न्यायपरायण पुलिस का सपना वाकई खाबों सा दूर लगता है। समकालीन कहानीकारों ने पुलिस

Scanned with CamScanner

Peer Reviewed Half Yearly Research Journal
ISSN 2249 - 2844 ANUSEELAN

अनुशीलन

गाँधी चिन्तन और साहित्य

वर्ष–53, अंक–46

प्रधान संपादक
प्रो. (डॉ.) के. अजिता
संपादक
डॉ. गिरीश कुमार के.के.

हिन्दी विभाग
कोच्ची विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोच्ची - 682 022
जनवरी, 2022

Scanned with CamScanner

5. महात्मा गाँधी : युग की माँग

डॉ. विष्णु तंकप्पन
सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग,
पय्यन्नूर कॉलेज, कण्णूर विश्वविद्यालय

सन् 2013 में गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नयी दिल्ली में 'मलयालम में गाँधी' विषय पर एक संगोष्ठी में भाग लेने और प्रपत्र प्रस्तुत करने का अवसर मिला था। प्रपत्र प्रस्तुति की तैयारी के सिलसिले में महात्मा गाँधी से संबंधित पुस्तकें और उनके जीवन से जुड़ी अनेक घटनाओं से गुज़रने का अवसर मिला। इस प्रकार विद्यार्थी जीवन में पहली बार गाँधीवादी विचारधारा को गहराई से समझने लगा। स्त्री, समाज, धर्म, लोकतंत्र, राजनीति, संस्कृति आदि पर गाँधी जी का विचार काफी महत्वपूर्ण रहा। वर्णव्यवस्था से संबंधित उनके विचार को लेकर काफ़ी वाद-विवाद हुए। उनके वर्ण व्यवस्था संबंधित विचारों से श्रीनारायण गुरु, डॉ. अम्बेडकर जैसे महारथ सहमत नहीं थे। फिर भी गाँधी जी के सभी भारतीय चिंतन आज भी प्रासंगिक हैं। उनके अहिंसा संबंधी दृष्टिकोण को विश्वस्तर पर मान्यता मिली। संयुक्त राष्ट्र (UN) द्वारा गाँधी जी के जन्म दिन को (अक्टूबर-2) विश्व अहिंसा दिवस घोषित करना इसका प्रमाण है। अब दुनिया के विभिन्न विश्वविद्यालयों में गाँधी दर्शन का एक विषय के रूप में अध्ययन हो रहा है। इसके अलावा दुनिया की सैकड़ों भाषओं में गाँधीवाद पर केन्द्रित रचनाएँ हुईं। इससे साफ़ जाहिर है कि गाँधी जी की मृत्यु के उपरांत कई दशकों के गुज़र जाने के बाद भी विश्व जनता के मन में उनके प्रति जो श्रध्दा और भक्ति है उन में ज़रा सा भी आँच नहीं आया है। लेकिन वर्तमान भारत में कई भ्रष्ट नेता, राजनीतिक दल और संगठन स्वार्थ लाभ के लिए गाँधी जी को अपनी विचार धाराओं से जोड़ने का प्रयास करते रहते हैं। गाँधी जी के भारतीय चिंतन को गलत परिभाषा देकर उनको भारतीय जनमानस के समक्ष एक गलत छवि प्रदान करने के पीछे निश्चय ही स्वार्थ लक्ष्य है।

वर्तमान समय अनेक विसंगतियों से गुज़र रहा है। देश आज कई चुनौतियों का सामना कर रहा है जैसे धार्मिक भेदभाव, दलित शोषण, नारी शोषण आदि। दरअसल गाँधी जी के पास उपर्युक्त हर समस्या का हल था। इसलिए वर्तमान संदर्भ में जनता पर गाँधी जी के विचारों का प्रभाव निश्चय ही अध्ययन का विषय है।

गाँधी जी बचपन में पूर्ण रूप से मामूली दर्जा के व्यक्ति थे। अपने विद्यार्थी जीवन

Scanned with CamScanner

ISSN 2231-6191

जन विकल्प

16

हिन्दी उपन्यास-2 : 2001-2022

विकल्प, तृशूर

Scanned with CamScanner

डॉ. विष्णु तंकप्पन

भारत में चुनाव को सुचारू ढ़ंग से चलाने के लिए निर्वाचन आयोग पहले से कायम था। लेकिन निर्वाचन आयुक्त के रूप में टी.एन. शेषन की नियुक्ति के बाद ही चुनाव प्रणाली में काफी सुधार आया है। वे जब भारतीय निर्वाचन आयोग के नेतृत्व में आये तब भारतीय लोकतंत्र अपने इतिहास की सबसे बड़ी चुनौतियों का सामना कर रहा था। उन्होंने खुद अपनी आत्मकथा *A Heart Full of Burden* में भारतीय चुनावों को 'दुनिया का आठवा अजूबा'[1] कहा। उन्होंने चुनाव सुधार के लिए सख्त कदम उठाया। इसमें मतदान पहचान पत्र लागू करना ऐतिहासिक कदम था, इसी तरह उन्होंने कई चरणों में चुनाव चलाये, उम्मीदवारों के चुनाव खर्चा को कम किया। इस प्रकार सदी के अंतिम दशक भ्रष्ट लोकतांत्रिक प्रणालियों को एक हद तक सुधारने की कोशिश की। इसके तहत एक हद तक नागरिकों को लोकतांत्रिक प्रणाली में तटस्थ रूप से भागीदार होने का मौका मिला। लेकिन भ्रष्टाचार के चंगुल से भारतीय लोकतंत्र मुक्त नहीं हो पाया। एक और चुनाव आयोग के प्रयत्न के तहत कई बेहतरीन नियमों और चुनाव प्रणालियों का कार्यान्वयन हुआ, दूसरी तरफ स्वार्थ लाभ के लिए इन नियमों के दुरुपयोग का षडयंत्र भी रचा गया। चुनाव जीतने के लिए राजनीतिक नेतृत्व अब बिलकुल नए तरीकों को अपनाया जा रहा है। उसके लिए अब जाली वोट और बूथ कैप्चरिंग की ज़रूरत नहीं। बल्कि जनता को गुमराह करके उनकी सोच और बुद्धि पर प्रभाव डालकर मतदान को अपने पक्ष में करने की अद्‌भुत ताकत अब उनके पास है। अगर उन्हें कोई खतरा है तो वह केवल विपक्षी स्वरों का है। लेकिन इन विपक्षी स्वरों को दबाने के लिए सत्ता कई प्रकार के षडयंत्र करती है। राष्ट्र द्रोह कानून इसका सशक्त उदाहरण है। भ्रष्ट राजनीतिक नेतृत्व राष्ट्र द्रोह कानून का गलत फायदा उठाकर प्रस्तुत कानून (Section 124 A) के ज़रिये विपक्षियों को अपने रास्ते से हटाते हैं। इस कानून के व्यापक दुरुपयोग के कारण सुप्रीम कोर्ट ने इस कानून को अब स्थगित किया है। लेकिन सत्ता अपने विपक्षियों को कुचलने के कार्यक्रम में कोई खास परिवर्तन नहीं लाई है। बल्कि वे समय के अनुसार नए तरीकों की खोज में है। उमाशंकर चौधरी के *अन्धेरा कोना* उपन्यास में विपक्षी स्वरों को मिटाने के लिए सत्ता के षडयंत्रों और महिला आरक्षण के नाम पर होने वाले नाटकों पर कटु व्यंग्य किया गया है। उपन्यास एक हद तक जादुई यथार्थवादी शैली के नज़दीक है। फिर भी वर्तमान भारत के यथार्थ के काफी निकट है।

Scanned with CamScanner

'सदाचार का तावीज़' कहानी में भ्रष्टाचार

डॉ.विष्णु तंकप्पन

हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार हरिशंकर परसाई का साहित्य में पदार्पण अपनी अलग शैली को लेकर हुआ था। पिछले कई सालों से उनके जन्मदिन पर साहित्यिक प्रेमी उनकी रचनाओं पर कई साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करते रहते हैं। उनकी जन्मशताब्दी भी बहुत निकट है। इसलिए निश्चय ही उनका साहित्य, चर्चाओं के केंद्र में आनेवाला है। हिन्दी साहित्य में व्यंग्य को एक विधा के रूप में प्रतिष्ठित करने में उनका योगदान महत्वपूर्ण है। इसलिए परसाई पूरे हिन्दी साहित्य में 'व्यंग्य सम्राट' के नाम से विख्यात हुए। हिन्दी साहित्य में भारतेंदु युग से ही व्यंग्य का स्पष्ट प्रभाव था। लेकिन साहित्य में उसे ऊँचा स्थान देकर प्रतिष्ठित करने का श्रेय परसाई को ही जाता है। उन्होंने अपनी स्वतः सिद्ध शैली में प्रभावशाली ढंग से व्यंग्य का प्रयोग किया तथा शैली मात्र से एक विधा के रूप में उसकी प्रतिष्ठा की। संक्षेप में कहा जाए तो भारतेंदु और द्विवेदी युग के बाद व्यंग्य के प्रयोग में सबसे ज्यादा सफलता परसाई ने ही पायी।

सामाजिक कुरीतियों और भारतीय लोकतंत्र में व्याप्त अडचनों को सुधारने के लिए उन्होंने एक सशक्त माध्यम के रूप में व्यंग्य को अपनाया। उनके ही शब्दों में कहा जाए तो 'व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखंडों का पर्दाफ़ाश करता है। यह नारा नहीं है, मैं कह रहा हूँ कि जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है, जितनी

नारियों के जीवन पर प्रकाश डाला है। उनकी जीवन यात्रा को देखकर ऐसा लगता है कि यह केवल उनकी कहानी नहीं है, संसार की कई दलित महिलाओं की कहानी है। आप अंत तक जीवन में संघर्ष करती रही हैं, यही प्रेरणा वर्तमान काल में जीनेवाली कई दलित महिलाओं के पथ-प्रदर्शन का काम करती है। इसमें उन्होंने असफल प्रेमविवाह, टूटता परिवार, जातिगत संस्कार, आचार, व्यवहार, आर्थिक दयनीयता, सामाजिक जन-आंदोलन, शिक्षा के प्रति आकर्षण, उच्च वर्ग द्वारा होनेवाले शोषण आदि प्रश्नों को स्वानुभावों के आधार पर चित्रित किया है। दलित महिलाओं के शोषण को कई कोणों से देखने का जो यशस्वी प्रयास कौसल्या जी ने किया है, अत्यंत प्रशंसनीय है।

सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल), तहसील-करमाळा, जिला-सोलापुर (महाराष्ट्र)।

UGC listed
List ID No : 305
Saoghatha
Scanned with CamScanner

3.3.1 RESEARCH ARTICLES IN JOURNAL

Dr. N M SREEKANTH
ASSISTANT PROFESSOR,
UG AND RESEARCH DEPARTMENT OF HINDI,
PAYYANUR COLLEGE, PAYYANUR.

नूतनवाग्धारा
संकल्पक्रम
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं

ISSN 0976-092X

साहित्य-संस्कृति के संकल्पक्रम की भाषापरक शोध-संदर्भ (Peer Reviewed) पत्रिका

नूतनवाग्धारा

नूतनवाग्धारा

संयुक्तांक 34-36, वर्ष : 11 (दिसम्बर, 2018)

यह अंक......

कालिकट विश्वविद्यालय, केरल से....

नूतनवाग्धारा

आग, जो शीतल करे, किंतु ठंडी न हो !!!

संपादक : डॉ. अश्विनीकुमार शुक्ल

अतिथि संम्पादक : डॉ. प्रमोद कोवप्रत

भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष संबंधों के अंतर्द्वंद्व

डॉ. एन. एम. श्रीकांत*

'स्त्री' शब्द का प्रयोग होते ही बहुत सारे विशेषण हमारे सामने आ जाते हैं- कोमल, दयावान, सहनशील, देवी, माँ, आँसू, पवित्रता, नीच आदि। स्त्री वह है, जो क्षमा से भरपूर हो, जो कुछ भी सहने की क्षमता रखती हो। वहीं पर 'पुरुष' शब्द का प्रयोग किया जाए, तो कठोर, क्रूर, बलशाली, श्रेष्ठ, अधिकार जमाने वाले, साहसी, योद्धा की छवि उभरती है। किसने दिया होगा इनको यह विशेषण? क्या सच में स्त्री और पुरुष इन्हीं विशेषणों के हकदार हैं? समाज, संस्कृति और परिवार सबके मूल में दो प्रमुख घटक हैं- स्त्री एवं पुरुष। समाज को समझने के लिए स्त्री और पुरुष को समझना अनिवार्य है। समाज में, संस्कृति में, परिवार में इनका क्या स्थान है यह जानना आवश्यक है। हाँ, यह बात भी सच है कि प्रकृति ने स्त्री और पुरुष को अलग-अलग रूप और वैशिष्ट्य दिया है। लेकिन ऊपर वर्णित शब्द मनुष्य द्वारा ही गढ़े गए हैं, जिसे आज हम स्त्रीत्व या पुरुषत्व कहते हैं। वह मनुष्य समाज द्वारा निर्मित विशेषता ही है।

स्त्री के संदर्भ में बताते हुए प्रसिद्ध फ्रेंच लेखिका सिमोन लिखती हैं- *स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि उसे बनाया जाता है।*[1] स्त्रियों को समाज, संस्कृति एवं परिवार मिलकर विशेष ढंग से रूपायित करते हैं। उसे उसकी वास्तविकता से दूर कर दिया जाता है। उसे बिंदी लगाने, माला पहनने, बाल बढ़ाने, काजल लगाने, खाना बनाने, पति एवं बच्चों की देखभाल करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। उसे मादा से स्त्री में ढाला जाता है। पर इस संदर्भ में यह भी गौरतलब है कि पुरुष भी पैदा नहीं होता, बल्कि उसे भी बनाया जाता है। उसे पुरुष बनना सिखाया जाता है, प्रशिक्षण दिया जाता है कि पुरुष को रोना नहीं चाहिए, उसका दिल पत्थर जैसा होना चाहिए। सुधा अरोड़ा लिखती है- *जिस तरह लड़की पैदा नहीं होती, उसे बनाया जाता है, वैसे ही लड़का भी पैदा नहीं होता, उसे बचपन से ही ठोंक-पीटकर लड़का बनाया जाता है। वह रोये तो उसके आँसू छीन लिए जाते हैं- क्या लड़कियों की तरह रोता है।*[2] ऐसे ही प्रश्न खाने से लेकर कपड़ों तक खड़े किए जाते हैं, जिससे उसके अहं को चोट पहुँचती है। बच्चों के मन में लड़की, लड़कों का भेद नहीं होता, लेकिन जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं उनको उसके माता-पिता, अध्यापक, समाज सब मिलकर स्त्री-पुरुष के खेमों में विभाजित कर देते हैं। इससे वे एक-दूसरे के पूरक बनने के बदले एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी बन जाते हैं। मार्च, 2014 में कथादेश में प्रकाशित अपने लेख 'विमर्श से परे : स्त्री और पुरुष' में सुधा अरोड़ा लिखती हैं- *माना कि प्रकृति ने स्त्री और पुरुष की जैविक संरचना में आधारभूत अंतर रखा है पर प्रकृति ने जिस अंतर को एक दूसरे के पूरक के रूप में गढ़ा है, हम उसे ठोक-पीटकर दो परस्पर प्रतिद्वंद्वी या विपरीत खेमों में बदल देते हैं। दोनों युद्धरत पक्ष ताउम्र सींग लड़ाते आपस में लहूलुहान होते रहते हैं या एक फुंफकारता है और दूसरा अपने बचाव में आड़ लेता उम्र गुजार देता है।*[3]

किसी भी समाज में जिस प्रकार व्यक्ति-व्यक्ति का परस्पर सहयोग होना आवश्यक है वैसे ही स्त्री और पुरुष का परस्पर सहयोग होना भी आवश्यक है। इनके बीच यदि सहयोग नष्ट हो जाता है तो समाज में भी विखंडन की स्थितियाँ पैदा हो जाती हैं। कार्ल मार्क्स के अनुसार- *व्यक्ति का व्यक्ति से प्रत्यक्ष, प्राकृतिक और आवश्यक रिश्ता स्त्री से पुरुष का रिश्ता है। इस प्राकृतिक प्रजातीय रिश्ते में प्रकृति से मनुष्य का रिश्ता तत्काल मनुष्य से उसका रिश्ता बन जाता है। ठीक उसी तरह जैसे मनुष्य से उसका रिश्ता तत्काल प्रकृति से उसका रिश्ता बन जाता है- जो उसकी अपनी प्राकृतिक मंजिल है।* स्त्री और पुरुष का संबंध एक आवश्यक रिश्ते के रूप में देखा गया है। स्त्री-पुरुष संबंधों को परखने से हम मानव-विकास के सभी पहलुओं से परिचित हो सकते हैं।

स्त्री-पुरुष संबंधों के इतिहास पर नजर डालने से पता चलता है कि पुरुष कितना विजयी भाव से आगे बढ़ा है, और साथ ही किस प्रकार वह सब पर अपना आधिपत्य स्थापित करता आया है। हालाँकि दोनों ने सफर की शुरुआत साथ-साथ की थी। पर पुरुष ने जब उत्तराधिकार और निजी संपत्ति की अवधारणा के चलते स्त्री को

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

June 2021, Issue-03, Vol-01

अतिथि संपादाक :

१. डॉ. राठोड अनिलकुमार

२. डॉ. शिवशेट्टे गोविंद

३. डॉ. भगवान कदम

४. डॉ. शिंदे प्रकाश

५. डॉ. शेख मुखत्यार

६. डॉ. वारले नागनाथ

७. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

इसी रामसिंह के पास राणा पढ़ाई पूरी करता है। रामसिंह की बेटी अल्मा पढ़ी–लिखि है। राणा अल्मा की ओर आकर्षित् होता है। बाद में उसे पता चलता कि रामसिंह पुलिस का दलाल है। बाद में उसे भी मारा जाता है। पिता की मृत्यु के पश्चात अल्मा की गत हो जाती है। रामसिंह ने अल्मा को दुर्जनसिंह के यहाँ गिरवी रखा था। कबूतरा जाति के स्त्री को गिरवी रखा जाता है। दुर्जनसिंह ने अल्मा को सुरजभान को बेचा था। सुरजभान नेता तथा बड़े अफसरों को लडकियाँ बेचने का काम करता था। किसी नेता के लिए अल्मा को कमरें में बंद किया था। वह धीरज की सहायता से भाग जाती है। इधर राणा भी विक्षिप्त हो जाता है। अल्मा श्रीराम शास्त्री के पास पहुँच जाती है। वह पहले गुंडा ही था अब समाज कल्याण मंत्री बन गया है। अल्मा स्वयं को श्रीराम शास्त्री को समर्पित हो जाती है। एक दिन श्रीरामशास्त्रीकी मौत की खबर आ जाती है। अल्मा उत्तर अधिकारी बन जाती है। बेटा पिता का उत्तर अधिकारी बनता है, परंतु यहाँ पत्नी ही पति की उत्तर अधिकारी बन जाती है।

संक्षेप में अल्मा कबूतरी मैत्रेयी पुष्पा की एक सशक्त रचना है। लेखिका यहाँ यह बताना चाहती है कि भारत में आज भी अनेक ऐसी जनजातियाँ है जो शिक्षा से वंचित है। भारतीय समाज में स्त्री चाहे उच्चवर्गीय हो या निम्नवर्गीय उसका शोषण किया जाता है। भारत में अनेक जनजातियाँ है जिनके पास जीवीकोपार्जन का साधन नहीं है। ऐस समाज की नारीयाँ अपने देह का व्यापर करती है। 'अल्मा कबूतरी' में कदमबाई, भूरी अल्मा आदि पात्र है। कदमबाई एक बेसहारा औरत के रूप में चित्रित हुई है। उसके साथ मंसा छलकपट करता है। वह राणा को जन्म देती है। उसकी परवरिश करती है। उसकी पढ़ाई के लिए मंसा का सहारा लेती है परंतु अपने परिवार का हिस्सा नहीं बनाती है। दूसरे भाग में अल्मा की कहानी है। वह परिस्थिति का सामना करते हुए आगे बढ़ती है। उसका शोषण किया जाता है। फिर भी वह आगे बढ़ती है। अनेक समस्याओं से घिरी हुई नारी है। फिर भी वह अग्रेसर होती है और बाद में अपने पति की उत्तर अधिकारी बनती है। मैत्रेयी के यहाँ नारी जीवन समस्याओं का उद्घाटन किया है साथ ही समाधान भी बताया है। अल्मा कबूतरी स्त्री संघर्ष की गाथा है। सदियों से स्त्री को भोगनी पड़ी है। उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक स्त्री संघर्ष को चित्रित किया है।

50

सुरेंद्र वर्मा एवं गिरीश कर्नाड के नाटकों में स्त्री–पुरुष संबंधों के अंतर्द्वंद्व

Dr. N. M Sreekanth
Asst. Professor, Dept. of Hindi,
Payyanur College, Payyanur

****

स्त्री–पुरुष का संबंध प्रकृति का नैसर्गिक एवं जटिल संबंध है। उनके संबंधों पर विचार किए बिना समाज में समानता स्थापित करना संभव नहीं। स्त्री एवं पुरुष के संबंधों पर आज समाज, साहित्य तथा मानव जीवन से जुड़े हर स्तर पर चर्चा की जाने लगी है। साहित्य समाज से संबंधित है। इसलिए समाज की समस्याएँ साहित्य में भी प्रतिबिंबित होती रही हैं, और होती रहेंगी। ''साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है।'' उत्तर आधुनिक समय में भारतीय समाज अनेकानेक परिवर्तनों से गुजर रहा है। स्त्री–पुरुष संबंधी मान्यताओं में भी कई बदलाव देखे जा रहे हैं। स्त्री एवं पुरुष अपने–अपने स्तर पर स्वत्व की पहचान करने में व्यस्त हैं। दोनों के बीच अपनी अस्मिता को स्थापितकरने के क्रम में अनेक प्रकार के द्वंद्व जन्म ले रहे हैं। मार्च २०१४ में कथादेश में प्रकाशित अपने लेख 'विमर्श से परे : स्त्री और पुरुष' में सुधा अरोड़ा लिखती हैं– ''माना कि प्रकृति ने स्त्री और पुरुष की जैविक संरचना में आधारभूत अंतर रखा है पर प्रकृति ने जिस अंतर को एक दूसरे के पूरक के रूप में गढ़ा है, हम उसे ठोक–पीटकर दो परस्प र प्रतिद्वंद्वी या विपरीत खेमों में बदल देते हैं। दोनों युद्धरत पक्ष ताउम्र सींग लड़ाते आपस में लहूलुहान होते रहते हैं या एक फुंफकारता है और दूसरा अपने बचाव में आड़ लेता उम्र गुजार देता है।'' दोनों ही संबंधों की आस्था और विश्वास खोते जा रहे हैं। पितृसत्तात्मक समाज के परिणामस्वरूप स्त्री इससे

Indexed Journal
Refereed Journal
Peer Reviewed Journal

www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232

Volume: 7 **Issue: 5** **Year: 2021**

International Journal of Hindi Research

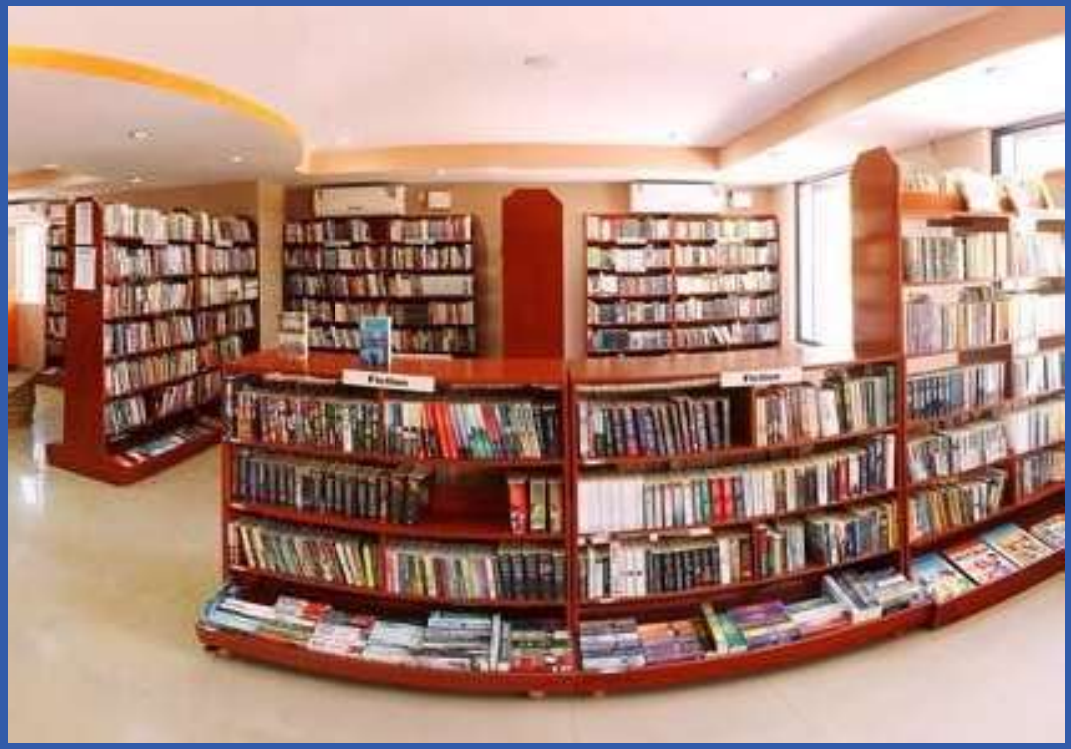

Published By
Gupta Publications
Journal List : www.newresearchjournal.com

International Journal of Hindi Research

Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 8

Publication Certificate

This certificate confirms that **"एन एम श्रीकांत"** has published article titled **"गिरीश कर्नाड के नाटकः मिथकीय एवं लोक कथा पर आधारित आधुनिक स्त्री-पुरुष संबंधों की व्याख्या (' ययाति'और 'हयवदन' के विशेष संदर्भ में)"**.

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**7**
Issue	:	**5**
Year	:	**2021**
Page Number	:	**108-110**
Certificate No.	:	**7-6-32**
Published Date	:	**28-10-2021**

Regards
International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
Email: hindi.manuscript@gmail.com

International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 28-09-2021, Accepted: 14-10-2021, Published: 28-10-2021
Volume 7; Issue 5; 2021; Page No. 108-110

गिरीश कर्नाड के नाटकः मिथकीय एवं लोक कथा पर आधारित आधुनिक स्त्री–पुरुष संबंधों की व्याख्या ('ययाति'और 'हयवदन' के विशेष संदर्भ में)

एन एम श्रीकांत
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, पय्यनूर कॉलेज, पय्यनूर, केरल, भारत

सारांश
गिरीश कर्नाड भारतीय नाट्य जगत में पौराणिक एवं मिथकीय आयामों को आधार बनाकर आधुनिक स्त्री–पुरुष संबंधों का गहरा चित्रण अपने नाटकों में करते हैं। वर्तमान समय में स्त्री पुरुष संबंधों पर विचार करना अनिवार्य है। समाज में संतुलित अवस्था बनाए रखने के लिए स्त्री एवं पुरुष का समान रूप से आगे बढ़ना जरूरी है। आधुनिक समाज में पूर्णता की तलाश में भटकते हुए लोग अनेक प्रकार के अंतर्द्वंद्व एवं संघर्ष का सामना करते हैं। इन अंतर्द्वंद्वों के कारण स्त्री एवं पुरुष के संबंधों पर गहरा बदलाव आया है। करनाड जी अपने नाटकों की सहायता से आधुनिक समाज के अंतर्द्वंद्व को व्यक्त करते हैं। अपने नाटकों में ऐतिहासिक पौराणिक एवं मिथकीय संदर्भों की सहायता से आधुनिक स्त्री पुरुष संबंधों की व्याख्या करते हैं। करनाड जी अपने नाटकों की सहायता से स्त्री पुरुष के आंतरिक संघर्षों, तनावों एवं यौन संबंधों की विडंबनाओं को प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत आलेख में उनके नाटक ययाति और हयवदन की सहायता से मिथकीय एवं लोक कथा के आधार पर आधुनिक स्त्री पुरुष संबंधों की व्याख्या का अध्ययन करने का प्रयास किया है पर है।

मूलशब्दः 'ययाति'और 'हयवदन', आधुनिक स्त्री–पुरुष संबंधों की व्याख्या

प्रस्तावना

गिरीश कर्नाड ने कन्नड़ नाट्य जगत की पुरानी मान्यताओं को तोड़कर आधुनिक जीवन की विचारधारा को स्थापित करने का प्रयास किया है। उनके नाटकों में ऐतिहासिक एवं पौराणिक या मिथकीय आयामों को आधार बनाकर और समसामयिक जीवन की समस्याओं विशेषकर स्त्री–पुरुष संबंधों पर आधारित नाट्य रचना अंत्यत विवादस्पद एवं चर्चित रही है। जयदेव तनेजा के अनुसार– "अपने वर्तमान समय, समाज, और सरोकारों–समस्याओं को समझने तथा नाट्य के रूप में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए महाभारत, पुराण, इतिहास, जातक एवं लोककथाएँ आरंभ से ही गिरीश कर्नाड को आकर्षित और प्रेरित करती रही हैं। मानवीय और विशेषतः स्त्री–पुरुष संबंधों का रहस्यमय तिलिस्मी संसार उनके नाटकों का केंन्द्रीय विषय रहा है। [1]" गिरीश कर्नाड का यह प्रखर व्यक्तित्व ही उनको उनके समकालीन कन्नड़ नाटककारों से अलग विशेष स्थान दिलाता है। आधुनिक जीवन में स्त्री एवं पुरुष एक–दूसरे के प्रति भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। स्त्री पुरुष में अपनी आस्था खो बैठी है। उसे लगता है कि पुरुष ने न केवल उसे उसके अधिकारों से वंचित रखा है बल्कि उसे मानव होने का दर्जा तक नहीं दिया है। फिर चाहे वह पिता हो, पति हो, बेटा हो या भाई। समय के साथ–साथ स्त्री–पुरुष के प्रेम संबंधों में परिवर्तन आया है। वैवाहिक संबंधों के पौराणिक मूल्य टुटने लगे हैं। पति–परमेश्वर का दृष्टिकोण बदल गया है। पुरुष (पति) एवं स्त्री (पत्नी) के बीच विवाहेत्तर संबंध बढ़ने लगे हैं। भाई–बहन, माँ–बेटे, ससुर–बहू, पिता–पुत्री आदि के रिश्तों में अनेक बदलाव दृष्टिगोचर हुए हैं जिनको गिरीश कर्नाड अपने नाटकों की सहायता से दर्शकों के सामने रखते हैं। डॉ. जयदेव तनेजा के अनुसार "इन संबंधों में भी सामान्य और साधारण की अपेक्षा निषिद्ध एवं वर्जित संबंधों और अगम्यागमन के असामान्य रिश्ते गिरीश को अधिक दिलचस्प और सम्मोहक लगते हैं।[2]"

'ययाति' गिरीश कर्नाड का पहला पौराणिक नाटक है। यह नाटक महाभारत के एक प्रसंग पर आधारित है। ययाति एक शक्तिशाली राजा है जिसका विवाह देवयानी से होता है लेकिन शर्मिष्ठा से भी उनका रहस्य संबंध स्थापित हो जाता है।

ययाति जीवन भर कामुकता के पीछे भागता रहता है। अपने बुढ़ापे से पुनः जवानी में आने के बाद भी वह यौन संबंधों से तृप्त नहीं होता। आधुनिक समाज में स्त्री एवं पुरुष में तनाव तथा संघर्ष पैदा होने का मूल कारण अपने दायित्वों से किनारा कर एक–दूसरे पर जिम्मेदारी आरोपित करना ही है। पति का यौवन नष्ट होने पर पुरु की पत्नी चित्रलेखा बहुत दुःखी होती है। वह अपने ससुर से कहती है कि यौवन के साथ–साथ उसे पुरु से संबंधित सब कुछ स्वीकारना पड़ेगा। यहाँ तक कि चित्रलेखा के शरीर को भी। साथ ही वह पूर्वजों के बनाए सभी नियमों को तोड़ कर ययाति द्वारा स्वयं को पत्नी रूप में स्वीकार सुख प्रदान करने को कहती है–

> "चित्रलेखाः (मुस्कुराकर) मैंने जब पुरुराज का वरण किया तब मुझे उनका परिचय नहीं था। मैंने वरण किया था, उनके तारूण्य को, मेरे गर्भ में चंद्रवंश की वृद्धि करने वाले पौरुष को। उन सबको आपने चूस लिया। अब उन्हें चलने के लिए भी सहारा चाहिए। आँखे दीये की रोशनी सहन नहीं कर सकती। मैने जिन गुणों का वर्णन किया था अब एक भी उनमें नहीं है, पर वे सब गुण आपमें अब भी हैं।[3]

वास्तव में, मनुष्य मात्र ही दुख और द्वन्द्व का वह कंकर है जिसमें निरंतर आर्त्त पुकार मची रहती है। चित्रलेखा एक आधुनिक स्त्री है जो समाज द्वारा नियमित नीतियों का विरोध करती है और मानती है कि व्यक्ति को अपने सुख की परवाह करनी चाहिए। उसे पुर्वजों के नैतिक नियमों को धारण करना स्वीकार्य नहीं है। भारतीय समाज में ससुर–बहू के संबंध को निषिद्ध माना गया है। वह समाज द्वारा स्वीकार्य संबंध नहीं है। गिरीश कर्नाड 'ययाति' में प्राचीन और नवीन मान्यताओं के मध्य स्त्री–पुरुष संबंधों में उभरे दुसरे द्वन्द्व का अभिव्यक्त करते हैं। ययाति नाटक के नारी पात्र कहीं पर भी अपनी परिस्थितियों के खिलाफ लड़ते हुए दिखाई नहीं देते सिवाय चित्रलेखा के। देवयानी एवं शर्मिष्ठा

Education and Society
(शिक्षण आणि समाज)

Special Issue
UGC CARE Listed Journal
ISSN 2278-6864

Education and Society

Since 1977

The Quarterly dedicated to Education through Social Development and Social Development through Education

March 2023

(Special Issue-1/ Volume-II)

INDIAN INSTITUTE OF EDUCATION

128/2, J. P. Naik Path, Kothrud, Pune - 411 038

Education and Society
(शिक्षण आणि समाज)

Special Issue
UGC CARE Listed Journal
ISSN 2278-6864

Education and Society

Since 1977

The Quarterly dedicated to Education through Social Development And Social Development through Education

Special Issue on the theme of

"Towards Zero- For a Sustainable Tomorrow"

March 2023

(Special Issue-1/ Volume-II)

Indian Institute of Education
J. P. Naik Path, Kothrud, Pune- 38

अनुक्रमणिका-Content

1. महामारी के परिप्रेक्ष्य में वैश्विक दृष्टि और साहित्य
डॉ. हेरमन पी. जे. 11

2. बेहतर दुनिया की प्रेरक कहानियाँ
डॉ. पी. प्रिया 15

3. ज़मिला केरकेट्टा की कविताओं में विश्वदृष्टि: संदर्भ 'ईश्वर और बाज़ार'
डॉ. शहला के पी 20

4. साहित्य, प्रतिबद्धता और विश्वदृष्टि
डॉ. एस. एम. श्रीकांत 28

5. महिला सशक्तिकरण और पहचान के संकट का उपन्यास 'कब्र'
मुनीर ओ के और डॉ. शहला के पी 31

6. 'किनिर' में आदिवासी जीवन और संघर्ष
शरद कुमार झारिया 37

7. आदिवासी लोक कथाओं में विश्वदृष्टि
अश्विना पी 44

8. फणीश्वर नाथ रेणु के आँचलिक उपन्यास में राष्ट्रीयता
जमीला ए के 49

9. समकालीन हिंदी-मलयालम महिला कहानीकारों की कहानियों में स्त्री अस्मिता एवं विश्वदृष्टि की पहचान
श्रुतीमोल एम के 53

साहित्य, प्रतिबद्धता और विश्वदृष्टि

डॉ. एन. एम. श्रीकान्त

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, पय्यनूर कॉलेज, पय्यनूर, कण्णूर विश्वविद्यालय, कण्णूर, केरल

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिकता के साथ-साथ वह एक भाषिक प्राणी भी है। वह अपना सामाजिक संबंध, आत्मबोध एवं जगत-बोध, ज्ञान की प्रक्रिया, भाषा के माध्यम से करता है। मैनेजर पांडेय लिखते हैं – "मनुष्य प्रकृति, परिवार, समाज और संसार का ज्ञान भाषा के माध्यम से ही प्राप्त करता है। मनुष्य अनुभव, भाव और ज्ञान का अर्जन, सर्जन और अभिव्यंजन भाषा के माध्यम से ही करता है।"[1] सर्जना ही साहित्य की मूल प्रवृत्ति है जो भाषा के माध्यम से साध्य बनता है क्योंकि समाज के विकास में भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज पर साहित्य काफी गहरा प्रभाव है। साहित्य मनुष्य को उसकी सीमाओं से उठाकर उसके हृदय का विस्तार करता है। मनुष्य में निहित दमित भावनाओं को वह अभिव्यक्ति के माध्यम से बाहर कर उसके हृदय को मुक्त कराता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य को 'हृदय की मुक्तावस्था'[2] कहा है। हृदय की मुक्तावस्था हृदय का विस्तार है और यह सार्वभौमिक सत्यों का उद्घाटन है। सार्वभौमिक सत्यों का उद्घाटन कवि या पाठक में विश्वदृष्टि को जन्म देती है। भक्ति काव्य पर अपने विचार प्रकट करते हुए मैनेजर पांडे लिखते हैं – "भक्ति हृदय का धर्म है हृदय के धर्मों में सर्वाधिक व्यापक उदात्त और माननीय धर्म प्रेम है।... वह मनुष्य को कुल, जाति, धर्म, संप्रदाय आदि की सीमाओं से ऊपर उठाता है और हर तरह की सत्ता के भय से मुक्त करता है।"[3] मुक्त करना या मानव जन्य समस्त सीमाओं से ऊपर उठाने का कर्म साहित्य करता है। इसीलिए साहित्य मनुष्य को उसके द्वारा निर्मित समस्त मलिनता से दूर कर उसे मानवीयता के नींव तक ले जाता है उसमें प्रकाश लाता है। प्रेमचंद लिखते हैं-"साहित्यकार का लक्ष्य केवल महफ़िल सजाना और मनोरंजन का सामान जुटाना नहीं है। वह देश भक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई की नहीं बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।"[4] इससे यह स्पष्ट है कि साहित्य सिर्फ एक मनोरंजन का वस्तु नहीं बल्कि वह एक विशेष लक्ष्य को अपने साथ लेकर चलता है और वह दूसरों के लिए मशाल बनता है। मशाल बनना अपने आप में अपनी प्रकृति के प्रति, समाज के प्रति उसकी प्रतिबद्धता है। कवि या साहित्यकार अपनी प्रकृति, अपने समाज और अपने समय के प्रति प्रतिबद्ध होते हैं। यह प्रतिबद्धता मनुष्य में विश्वदृष्टि का उद्घाटन भी करती है। हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं- "मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्ष पाती हो जो बाजार मनुष्य को दुर्गति हीनता और परमुखापेक्षता से बचा न सके, जो उसकी आत्मा को तेजोदीप्त न बना सके, जो उसके हृदय को पर-दुख कातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।"[5]

सदियों से कविता समाज में दमित एवं शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करती आई है। कविता पक्ष का पक्ष नहीं बल्कि विपक्ष का पक्ष लेती है। यह पक्षधरता भक्तिकालीन कवियों से लेकर समकालीन कवियों तक देख सकते हैं अब चाहे वह कबीर, निराला, मुक्तिबोध या धूमिल हो। निराला लिखते हैं - "मैंने 'मैं' शैली अपनायी / देखा एक दुखी निज भाई / दुख की छाया पड़ी हृदय में मेरे / झट उमड़ वेदना आयी।"[6] कविता व्यक्तिगत 'मैं' की बात नहीं करती बल्कि अपने सहजीवियों के साथ अपने संबंध को जोड़कर एक सार्वभौमिक दृष्टि या सामाजिक 'मैं' को जन्म देती है। धूमिल ने भी अपनी पंक्तियों के माध्यम से कवि या कविता की पक्षधरता का बोध कराया है- "कविता शब्दों की अदालत में अपराधियों के कटघरे में खड़े / एक निर्दोष आदमी का हलफनामा है।"[7] कविता की यही प्रतिबद्धता उसे सामान्य से